उपन्यास

सुष्मिता सान्याल के डायरी

हरेन्द्र कुमार

उपन्यास सुष्मिता सान्याल के डायरी हरेन्द्र कुमार

सुष्मिता सान्याल के डायरी

सुष्मिता सान्याल के डायरी

(उपन्यास)

हरेन्द्र कुमार

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

अनुज्ञा से प्रथम संस्करण : 2027

ISBN 978-93-47593-26-0

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192

https://anuugyabooks.com

शाखा कार्यालय : धर्मकाँटा चौक, राष्ट्रीय राजमार्ग 57,
एम.बी.बी.एल कॉलेज रोड, बैरिया, मुजफ्फरपुर-842 003 बिहार

शाखा कार्यालय : बी-1171, द्वितीय तल,
ग्रीन फील्ड्स कॉलोनी, फरीदाबाद-121010 हरियाणा

शाखा कार्यालय : 301, तृतीय तल, राधाकृष्ण अपार्टमेंट, साँई कॉलोनी,
स्टेशन रोड, चाईबासा, पश्चिमी सिंहभूम-833201 झारखंड

मूल्य : 200 रुपये

आवरण

हरेंद्र कुमार

अनुज्ञा बुक्स द्वारा भारत में मुद्रित

SUSHMITA SANYAL KE DIARY

Thrilling Novel *by* ***Harendra Kumar***

भूमिका

भोजपुरी के जड़ता के तुड़त उपन्यास

हरेंद्र कुमार पांडेय के उपन्यास 'सुष्मिता सान्याल के डायरी' भोजपुरी उपन्यास के परंपरागत छवि से हट के रचल गइल बावे। भोजपुरी के छवि पुरान विषय, गाँव, आदर्श, नैतिकता, सास-पतोह जइसन विषय पर टिकल रहेला। हरेंद्र जी के ई उपन्यास विवाहेत्तर संबंध जइसन जटिल आ आधुनिक समस्या पर आधारित बावे। हालाँकि एह विषय पर भोजपुरी में पहिलहूँ लेखन भइले बावे। भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध नाटक 'गबरघिंचोर' में विवाहेत्तर संबंध के चित्रण बावे। एह सबके बावजूद भोजपुरी के बारे में ई विषय अपवादे भर बावे। हरेंद्र जी के उपन्यास कथ्य आ शिल्प दुनो दृष्टि से नया बावे। उपन्यास के कुछ दृश्य मादक बावे। कही-कही ई. डी. एच. लॉरेंस के उपन्यास 'लेडी चैटर्लीज लवर' के इयाद दिवा देता।

ई उपन्यास छोट काया में बावे। एकर कहानी पाठक के मन मस्तिष्क के झकझोर के रख देता। पति से तालाक खातिर पत्नी न्यायालय में जा तारी। केस लंबा चलता। एही बीच विचार बदल जाता। अंत में दुनू में समझौता हो जाता।

एकर शिल्प आधुनिक आ कसल बावे। बेटा के अचके संयोग से अपना माई के डायरी हाथे लागता, जवना में ऊ अपना विवाहेत्तर उद्दाम आ मादक यौन वर्णन कइले बड़ी।

आज के युग में बियाह, परिवार जइसन संस्था के जरूरत पर

बहस होत आइल बावे। कई गो आधुनिक विचारक बियाह, परिवार जइसन संस्थन के जरूरत पर प्रश्नचिह्न लगवले बावे। एह उपन्यास में बियाह के पहिले आ बियाह के बाद मन के बदलत मिजाज के स्वाभाविक चित्रण भइल बावे। स्त्री-पुरुष दूनू के मन बदतल बावे।

हालाँकि एह उपन्यास में तलाक के प्रयास के अनावश्यक बतावल गइल बावे।

एह उपन्यास में भोजपुरी के बदलत रूप लउकता। रउवा के जगे आप, ही आ भी के प्रयोग से ई लउकता। भाषा परिवर्तनशील होला। एकरा के रोकल नइखे जा सकत। कई जगे वाक्य विन्यास व्याकरण के नियम का जगे बोलचाल के अनुसार रखल गइल बा। ऐसे प्रवाह बनल रहता।

ई उपन्यास हमारा एतना नीमन लागल कि हम एकर हिंदी अनुवाद क देनी। एकरा पहिला संस्करण में कई गो भाषिक अशुद्धि रहे जवन एह संस्करण में दूर हो गइल बावे।

एह उपन्यास के दुनिया के श्रेष्ठ उपन्यासन के पंक्ति में राखल जा सकता।

जीतेंद्र वर्मा
हिंदी विभाग,
दर्शन साह महाविद्यालय, कटिहार

आपन बात

साँच कहानी से भी विचित्र होला। काहे कि– साँच बोले आ सुने के ताकत आदमी में ना होला। झूठ खातिर कवनो मापदंड नइखे–एही से झूठ हमेशा पूर्ण होला।

बाकिर साँच हमेशा अर्द्धसत्य होला, काहे कि साँच कहावे खातिर ओकरा सामाजिक मापदंड के मुताबिक होखे के पड़ेला। तऽ ई कहानी भी अर्द्धसत्य ही बा।

भोजपुरी में लिखे खातिर हमार आपन स्वार्थ निहित बा। हमरा दूसरा कवनो भाषा में लिखे में हमेशा डर लागल रहेला जबकि भोजपुरी माई के गोदी जइसन बा। हम जानतानी कि भले माई से दूर बानी, बहुत दूर, बाकिर उनके पास जाइब त ऊ हमरा के डटहीन ना हमार गलती माफ कर दीहन।

–हरेन्द्र कुमार

एक

परिवार अदालत

अलीपुर

कोलकाता

केस संख्या 76/1987

श्रीमती सुष्मिता सान्याल

बनाम

डा. अजितेश लाहिड़ी

आदेश तारीख 13.9.1989 (बुधवार)

दूनो पक्ष के प्रार्थना स्वीकार क के,
ई अदालत एह केस के बंद करे के हुक्म देता।

हस्ताक्षर

(गोपा बसु)

जज

बस एतने लिखल कागज सुबेश लाहिड़ी खातिर पहाड़ बनके खड़ा भइल रहे। सुबेश लाहिड़ी 2009 बैच के मध्यप्रदेश कैडर के आई.ए.एस. अधिकारी रहलन। 2028 में ऊ भारत सरकार के कानून मंत्रालय में सह सचिव के पदभार संभालत रहलन। देश के इनल-गिनल उच्च अधिकारी में उनकर नाम गिनाव। कवनो समस्या के चुटकी में समाधान निकाले में उनकर जोड़ ना रहे।

एक दिन कानून मंत्री आ उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के साथ ऊ बइठल रहस। सरकारी विषय पर बातचीत करीब-करीब खत्म हो आइल। तबे मंत्री जी के न जाने का मन में आइल कि कह बइठलन–

"न्यायाधीश महोदय, रउवा सब खाली कानून के दांव-पेंच ही चलाइब आ कि कुछ जनमुखी कार्यक्रम भी बनाइब।"

मुख्य न्यायाधीश अपना स्वाभाविक तरीका से उत्तर दिहलन–

"ओकरा खातिर त रउवा सभन बानी। यदि रउवा मन में कुछ होखे त बतावल जाव।"

मंत्री जी संगे-संगे सुबेश के ओर निहरलन। सुबेश के दिमाग तेजी से चले लागल। अगिला साल वोट होखेवाला बा। मंत्री जी के नजर जरूर कवनो अइसन जगह बा जहवाँ भरपुर प्रचार के गुंजाइश होखे। सुबेश अभी सोंचते रहस कि मंत्री जी के आवाज आइल–

"अरे रउवा हमरा बुझाता कि रउवा दूनों के हम फेर में डाल दिहनी। माफी चाहत बानी। हमरा कहे के मतलब रहे कि कानून समाज के ज्वलंत समस्या के स्वस्थ समाधान खातिर बहुत कुछ कर सकता। अब देखल जाव तलाक के दर केतना बढ़ल जाता। जदि अइसहीं चलल त शादी से ज्यादा तलाक होखे लागी। परिवार अदालत कानून 1984 में बनल रहे बाकिर ओकरा बाद एह क्षेत्र में ज्यादा कुछ नइखे भइल। त हमरा कहेके मतलब बा कि एह दिशा में

कुछ करे के सोची सभें।"

न्यायाधीश महोदय का सोचले इ तऽ ना पता चलल, बाकिर सुबेश के समझे में कवनों कुछ बाकी ना रहल। ऊ संगे-संगे कहलन–

"सर, महीना भर में हम एगो प्रस्ताव तैयार करतानी।"

मंत्री जी अच्छी तरह से जानत रहस कि सुबेश लाहिड़ी के एक महीना माने 30 दिन होला 31 दिन ना। उनका चेहरा पर एगो संतुष्टि के भाव फइल गइल। न्यायाधीश महोदय सुबेश से पूछलन– "हमरा तरफ से का करे के परी।"

"रउवा कार्यलय से एगो विज्ञप्ति निकाल दिहल जाव कि देश के हरेक परिवार अदालत में अब ले जेतना तलाक के मुकदमा दायर भइल। ओह मुकदमा के बारे में टिप्पणी के साथ पूरा विवरण मंत्रालय में एक सप्ताह में आ जाय के चाहीं।"

मंत्री जी संग-संग न्यायाधीश महोदय की ओर मुखतिब भइलन– "हाँ प्रधानमंत्री जी से रउवा कार्यक्रम के बारे में आजे चर्चा भइल ह। आप जाये के तैयारी करीं।"

'हेग' में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होखे के रहे जवना में जाये खातिर न्यायाधीश महोदय के बड़ी इच्छा रहे।

दू

ठीक दू सप्ताह बाद सुबेश लाहिड़ी आपन कंप्युटर खोल के बइठलन। बाहर लाल बत्ती जल गइल। माने ई एक घंटा ऊ ऑफिस के विशेष काम करे में व्यस्त बाड़ें।

कंप्युटर कैलेंडर में अपने आप नोट पेज आइल। फेर माउस क्लिक से ऊ परिवार अदालत बाक्स दबवले। लिखल आइल– राज्यवार ब्यौरा संलग्न एक्सेल सीट में।

माउस क्लिक– राज्यन के लिस्ट। प्रत्येक का सामने दू गो बाक्स बनल रहे। एगो ग्राफिक डाटा आ दूसर विस्तार डाटा खातिर। पहिले ग्राफिक डाटा दबलन सुबेश। प्रत्येक राज्य के साल का अनुसार ग्राफ रहे। ओकरा संगे सारा भारत के ग्राफ भी रहे जवना से बुझात रहे कि ओह राज्य में तलाक के दर सारा देश के तुलना में ज्यादा बा कि कम। एक-एक क ऽ के प्रत्येक राज्य के ग्राफ सुबेश देखे लगले। सुबेश आई.आई.टी. के छात्र रहलन। उनका खातिर ग्राफ आ गणितीय वर्णन स्वाभाविक तौर पर बड़ा ही सरल रहे। बीसवीं सदी आ इकीसवीं सदी के अंतर साफ बुझात रहे। जहाँ बीसवीं सदी में ग्राफ एक्स-अक्षर से सटल रहे वहीं इकीसवीं सदी में ऊपर की ओर तेजी से बढ़ल जात रहे। दोसर बात आउर दीखत रहे। 2010 तक जवना राज्यन में तलाक ना के बराबर रहे उहां बाद के सालन में ग्राफ करीब-करीब वाई (y) अक्षर में समानांतर हो गइल रहे।

"अरे बाप रे।"

हठात सुबेश के मुँह से निकलल। लागता देश से एक पति एक

पत्नी सिद्धांत खतम होखे वाला बा। मंत्री जी के प्रति पहिला बार उनका मन में अच्छा विचार आइल। ई नेता लोग वाकई देश के समस्या के तरफ नजर राखेला। नौकरी पेशा लोग के दिन त हाय कैरियर! हाय कैरियर! करे में बीत जाला।

ऊ कुर्सी से उठलन। एक बार खड़ा होके देह सीधा कइलन। फ्लास्क से कप में काफी ढार के पीयल शुरू कइले। दू-तीन चुस्की के बाद फिर से कुर्सी पर बइठलन। उनकर हाथ अपने आप माउस क्लिक से खेले लागल।

अबकी बार राज्यवार तालिका प्रत्येक साल के तालिका अलग रहे। कालम बनल रहे–

(1) केस संख्या तारीख का साथ

(2) वादी पक्ष

(3) प्रतिपक्ष

(4) फैसला के तारीख

(5) फैसला

(6) अभ्युक्ति (रिमार्क)

फैसला वाला कालम तीन भाग में बटल रहे–

तलाक स्वीकार।

तलाक अस्वीकार।

जवन वापस लीहल गइल। वापस लिहल केस परफरमा भी सुबेश लाहिड़ी ही बना के देहले रहस। एकबार फेर से राज्यवार डाटा खोले लगलन। एक-एक कर के राज्य आवे लागल आंध्र प्रदेश, अरुणाचल, असम, छत्तीसगढ़– सुबेश के आपन राज्य। कुछ देर खातिर सुबेश के दिमाग में आपन शहर रायपुर घुमे लागल। रायपुर के एकमात्र पब्लिक स्कूल सेंट थामस में उनकर 14 साल गुजरल रहे–नर्सरी से बारह तक। 1989 से 2003 तक। “ना, अभी

समय नइखे सोचे के।” आपन सर झटकलन। अपना बाबा के बात अनायास दुहरा देहले–

Never look behind boys
when you are on the way
Time enough for that boys on some future day

(रास्ता जब ठीक लागे पीछे मुड़ के मत देख बच्चा ओकरा खातिर भाविष्य में तहरा काफी समय मिली)

सुबेश के अंगुरी पर माउस क्लिक कर दिहलस। दोसरा राज्य के डाटा कंप्युटर स्क्रीन पर आ गइल। फिर दोसर।

सबसे आखिर में पश्चिम बंगाल। सुबेश एकबार सोचलन। ना जाने बंगाली सब के का बुद्धि बा। कोलकत्ता के कोलकाता बनावे खातिर लगातार आंदोलन भइल रहे। बाकिर पश्चिम बंगाल ना बदलल। दुःख के बात इहे रहे कि बंगाली होके भी सुबेश ना त बंगला बोल सकस रहस न लिख सकस। बंगाली भाषा में ऊ सिर्फ माँ आ बाबा छोड़ के कुछ न बोल सकस। शुरू में जब दोसर लड़ीका मॉम-डैड या मम्मी-पापा कहके अपना माता-पिता के संबोधन करस त उनकर माँ-बाबा कहल उन्नीसवीं सदी के संबोधन जइसन सुनाव। बाकिर, सुबेश खातिर ऊ माँ-बाबा संबोधन भगवान के नाम जइसन रहे। एतना ऊपर अइला के बाद भी उनका मुँह से अनायास माँ शब्द ही निकलेला।

आई.आई.टी. के दिन में उनका के चिढ़ावल जाव ई कहके कि– *आ गइले माँ के आँचरा से!*

अइसही छोट-छोट याद ही आदमी के जिंदा राखेला। चाहे काम के बोझ में दबल रहे या फुर्सत में ईयादन के एक बार फिर से झटक के सुबेश डाटा पर मन स्थिर कइले।

बंगाल के ग्राफ में बड़ा अंतर रहे। शुरू के दिन में तलाक के ग्राफ पूरा भारत के तुलना में ऊपर रहे बाकिर ऊ नीचे चले लागल रहे।

केसन के लिस्ट पर नजर दउड़ावे लगलन। लिस्ट नीचे से ऊपर रहे। अर्थात 2028 से शुरू भइल रहे। 2028 में कुछ देखे लायक ना रहे काहे कि कवनो फैसला आवे में कम से कम दू साल लागत रहे। अइसे भी तलाक के मामला में कानूनन कम से कम एक साल समय दीहल अनिवार्य रहे।

सुबेश के गणितीय दिमाग सारा डाटा दू भाग में देखत रहे। 1990 से 2000 आ 2000 से 2025। काहे कि कवनो ठोस प्रस्ताव खातिर एगो खास डाटा के ही जरूरत होला। यदि डाटा सम्हार में ना आई त ऽ प्रस्ताव तैयार ना हो सकी। एकरा के कहल जा सकता– परिणाम निश्चित करके परीक्षा।

तीन

सुबेश लाहिड़ी 1990 से ऊपर के डाटा पर ध्यान ना देत रहस। बाकिर कोलकाता के परिवार न्यायालय भारत के सबसे पुरान चार गो न्यायालयन में से एक रहे। परिवार अदालत के शुरुआती दिनन के रूपरेखा जाने खातिर पुरान केसन के बारे में जानल उनका जरूरी बुझाइल। एही से सुबेश 1990 से पहिले वाला केसन के विवरण पर थोड़ो ध्यान देवे लगलन। एकहो गो के केसन के विवरण कंप्युटर स्क्रीन पर आवत रहे आ सुबेश नोट पैड पर कुछ लिखत जास। 90, 89, 88, 1987 के आखिर के सउँसे संख्या रहे 113। शुरू भइल 113, 112, 111 ... ... संख्या 76/1987। सुबेश के आँख पहिले तऽ फइल गइल। फेर भिंचा गइल जइसे सूक्ष्म चीज देखे के बेरा होला। हालाँकि कंप्युटर के हरफ वोही साइज के रहे जइसन बाकी सब रहे। बाकिर सुबेश खातिर हरफन के आकार जइसे छोट हो गइल होखे ऊ फेर से पढ़लन–

श्रीमती सुष्मिता सान्याल (वादी पक्ष)
बनाम
डॉ. अजितेश लाहिड़ी (प्रतिपक्ष)

फैसला वाला कालम में लिखल रहे Withdrawn by mutual consent. (परस्पर सहमति से वापस लिहल गइल)। आदेश 1989 के सितंबर महीना में पारित भइल रहे। साल 1989 सुबेश के जिनगी

में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण रहे। 1989 के अप्रैल महीना में सुबेश पहीला बार यूनीफार्म पहीन के स्कूल गइल रहस। स्कूल के गेट पर खड़ा माई-बाबू जी के ओर मुड़ के ऊ देखत रहलन। बाबा चश्मा उतार के रूमाल से आँख पोछत रहस आ माई हाथ हिला के 'टाटा बेटा' बोलत रहली। तबे स्कूल के सहायिका सुबेश के हाथ पकड़ के लगभग खींच के अंदर क्लास में घुसा दिहली। सुबेश के जन्म एक्समस के दिन भइल रहे। सब प्रमाण पत्र में उहे लिखल बा–

जन्म तिथि	:	25 दिसंबर, 1984
जन्म स्थान	:	जादवपुर, कोलकाता
पिता	:	अजितेश लाहिड़ी
माता	:	सुष्मिता सान्याल

शुरू के दिनन में सुबेश के बड़ा जिज्ञासा रहे। माई के पदवी सान्याल बा, लाहिड़ी काहे नइखे। जब पहिला बार ई जिज्ञासा सुबेश अपना बाबा के पास जाहिर कइले त उनकर बाबा शांत स्वर में जवाब दीहलन–

"माई से पूछ लीहऽ। एकर जबाब उहे बतईहन।"

फेर माँ बतवली हमार सारा सर्टिफिकेट में इहे पदवी बा। इहाँ तक कि हमार वकील वाला रजिस्ट्रेशन भी एही पदवी से बा। एकरे कारण हम तोहार बाबा वाला पदवी ना लिखीले।

लड़िका सुबेश खातिर एतना जवाब ही काफी रहे। हालाँकि ऊ जबले 12 पास ना भइलन तबले उनकर माई कबो कोर्ट ना गइली। उनका 12 पास भइला के बाद ऊ कचहरी गइल शुरू कइली। सुबेश का अबो याद बा उनका माँ के पहिला दिन कचहरी जात। सफेद साड़ी का उपर काला कोट पहन के ऊ गाड़ी में बइठली। बाबा पास में आपन उहे हाफ सर्ट आ पैंट में रहस। सुबेश ड्राइवर का बगल में बइठल रहस बाकिर बेर-बेर पीछे माँ-बाबा के निहारत रहस। बाबा

के एके लाइन सुनाव– Dont take tension yaar (परेशान मत होखऽ यार) बाबा के ई डॉयलग सुनके सुबेश का हँसी आ गइल रहे। ऊ मुँह घुमा लिहलन। एकरा बाद दू साल बहुते कठिन रहे सुबेश खातिर। खाली पढ़ाई आ पढ़ाई। 6 से 7 घंटा सुतल छोड़ के कवनो समय फुर्सत ना रहे। इहाँ तकले कि बाथरूम में भी नोट ले के जास। कबो-कबो बाबा बोलस–

"तनि आराम कर लऽ बेटा।"

बाकिर माँ डाँट देस बाबा के–

"रउवा सलाह के जरूरत नइखे। साल भर के त बात बा। फेर करिहे ना आराम सारा जिनगी।"

सुबेश के सामने माँ-बाबा दुनों के चेहरा घुमें लागल रहे। बाबा के ऊ कबो खिसियात ना देखले रहस। कामवाली दाई होखे भा सब्जीवाला सभकरा से माई ही निपटस। बाबा के कबो ऊ कवनों चीज चाहत ना देखले रहस। कपड़ा से लेके खाना-पीना तक सब माँ के ही अधिकार क्षेत्र में रहे। त ई मोकद्दमा का उनका माँ-बाबा के बीच में भइल रहे? सुबेश के आँख बंद हो गइल। आदमी के मनोदशा आँखिन से ही जाहिर होला। इंटरकाम पर सहायक के बोललन– Ask for case file No. 76/1987 of Alipore Family Court, Kolkata. (अलीपुर, कोलकाता के केस फाईल नं. 76/1987 मंगवाव।)

चार

रायपुर
छत्तीसगढ़ के राजधानी
प्रोफेसर कॉलनी के कोना वाला मकान
गेट के पास देवाल में नाम फलक पर लिखल बा–

डॉ. अजितेश लाहिड़ी
श्रीमती सुष्मिता सान्याल

गेट से अंदर ढुकते बरामदा रहे। बरामदा में दू गो दरवाजा खुलत रहे। एगो सदर दरवाजा। दोसर दरवाजा पर ताँबा के प्लेट पर लिखल रहे–

सुष्मिता सान्याल, अधिवक्ता

कमरा ठीक वकील के कमरा जइसन ही रहे। चारों ओर फर्श से दीवाल तक रेकन में मोटा-मोटा किताब भरल रहे। कवनों वकील के क्षमता अइसन किताबे के आलमारी से ही पता चलेला। मालूम ना ऊ सब किताब वकील लोग कबो खोलबों करे ला कि ना!

बीचों-बीच एगो बड़हन टेबुल रहे। टेबुल पर बायाँ तरफ खुलल लैपटॉप कंप्युटर रहे। वकील के कुर्सी लकड़ी के बनल रहे। बाकिर देखिए के बुझाव कि महंग बा। टेबुल का सामने चार गो कुर्सी रहे। बीच में आवे जाये के जगह छोड़ के आउर चार गो कुर्सी राखल रहे। एक कोना में सहायक के कुर्सी टेबुल रहे। कमरा में कवनों कैलेंडर ना टांगल रहे। खाली टेबुल पर एगो टेबुल कैलेंडर रहे। कमरा में खाली एगो चीज बड़ा ही अनकस रहे। एतना अलग किस्म के सजल कमरा

में ऊ फोटो फ्रेम वाकई बड़ा भद्दा दीखत रहे। –देखला पर कम से कम ऊ फोटो के उम्र पचास से कम ना लागत रहे। ओमे एगो मर्द औरत के साथ एगो बच्चा के फोटो रहे। लागत रहे स्टूडियो में खीचल फोटो रहे। तीनों के मुँह पर एगो अइसन हँसी लऊकत रहे जवन फोटो खींचे के समय पचास साल पहिले जरूरी रहे। हरेक फोटोग्राफर बटन दबावे का पहिले जरूर कहस– स्माइल प्लीज। जाने वाला लोग के मालूम रहे ई फोटो वकील साहिबा, उनकर पति प्रोफेसर साहेब आ बेटा के बा। सुष्मिता के आजो विचित्र लागेला कि रायपुर में अजितेश के केहू नाम से ना बोलावे। जब भी उनकर बात आवेला लोग प्रोफेसर साहब के नाम से ही पुकारेला। ई बात अलग रहे कि प्रोफेसर होखे का आस में अजितेश मृत्यु के दू साल पहिले 'रीडर' पद पवले रहस। प्रोफेसर 1989 के फरवरी महीना में लेक्चरर हो के रायपुर आइल रहस।

सुष्मिता के आज भी याद बा। 14 फरवरी, 1989 मंगलवार के तीनों प्राणी सुबह 8 बजे मुंबई मेल से रायपुर स्टेशन पर उतरल। तब ना छत्तीसगढ़ राज्य बनल रहे ना रायपुर राजधानी रहे। कवनों जिला मुख्यालय जइसन हालत रहे रायपुर के। स्टेशन से निकल के जब ऊ सब बाहर आइल त कॉलेज के चपरासी खड़ा रहे। पीछे जनवरी में जब अजितेश ज्वाईन करे आइल रहस तबे प्रिंसिपल ओह बंगाली चपरासी से परिचय करा दीहले। अपना आवे के तारीख बता के प्रिंसिपल के ऊ फोन करे समय खास करके निमाई चक्रवर्ती के भेजे खातिर अनुरोध कइले रहस।

निमाई अजितेश आ सुष्मिता के पैर छुअलस। स्टेशन से सीधा दूगो रिक्सा करके ऊ सब कॉलेज के साथ क्वार्टर में पहुँचल। हालाँकि निमाई अपना तरफ से बड़ी साफ-सफाई कईले रहे बाकिर घर के अवस्था सुष्मिता के पसंद आवे के कवनों सवाले ना रहे। फिर भी

रायपुर आइल जइसन समझौता के सामने गंदा घर से समझौता के कवनों माने ना रहे।

जइसन कि पहिलही बतावल बा 1989-90 में रायपुर छोट शहर रहे। बाकिर भीतरे-भीतर बड़ा शहर में तब्दील होखे के सुगबुगाहट साफ-साफ समझ में आवे। शुक्ला परिवार के बड़ा ही सशक्त पकड़ रहे सब चीजन पर। कोलकत्ता आ मुंबई के बीच में भईला से कारोबारी भी भारी संख्या में आइल शुरू क दीहले रहलन। जमीन-जायदाद के भी माँग बढ़ल जात रहे। पुराना शहर के बाहर दस एकड़ के एगो प्लाट प्रोफेसर कॉलनी कोपरेटिव के नाम से सरकार दीहले रहे। बड़ी मुश्किल से तीस गो कॉलेज शिक्षक लोग मिलके ओह प्लाट के घर बनावे लायक तइयार कइल लोग।

अजितेश स्वभाव से सुस्त किस्म के आदमी रहस। बोलस धीरे-धीरे, खास धीरे-धीरे, चलस धीरे-धीरे। सुष्मिता उनका ठीक विपरीत रहली। सब जल्दी-जल्दी। ओह दूनो के एक साथ देख के सभे फुसफुसाव "ना जाने कइसे निभे ला दूनो प्राणी में।" बाकिर जाने वाला जानत रहे कि दूनो के स्वाभाविक भिन्नता ही एक दूसरा के पूरक के काम करे। अच्छा-बुरा सब समय में एक जाना के कमजोरी दूसरा के कारण बनल रहे।

प्लाट लेहला से लेके ओपर घर के डिजाईन वगैरह सब कुछ सुष्मिता के देख-रेख में ही बनल। बाकिर एही सब के बीच में सुबेश आठ पास करके नव में पहुँच गइले। तबे तऽ सब काम से बड़ा काम आ गइल सुबेश के पढ़ाई। सुष्मिता के सबसे बड़ा कमजोरी रहे कवनों उद्देश्य खातिर पागलपन के हद तक पहुँच गइल। सुबेश का बड़ा बुरा लागे। ऊ एने ओने देखके बाबा का पास जा के बइठस। बाबा के उनके सर पर हाथ फिरावल बड़ा ही अच्छा लागे। माँ के प्यार उनका डाँट से ज्यादा रहे। हजार मन ना रहला पर भी कंप्लान पीयल

एकदम जरूरी रहे सुबेश खातिर आ उहो ठीक 9 बजे–पाँच मिनट पहिले ना बाद में। कबो बो अइसन ना भइल कि सुबेश जाग के पढ़ाई करस होखस आ सुष्मिता सुतल रहस। 10 के परीक्षा के परिणाम आइल आशा के मुताबिक पूरा राज्य के टॉपर में सुबेश के नाम रहे। बाकिर सुष्मिता खातिर ई रिजल्ट के कवनों माने ना रहे। रिजल्ट त 12 के चाहीं बाकिर सुष्मिता आखिरकार हार गइलीं बाप-बेटा से। उनका हजार कोशिश के बाद भी सुबेश के मन जीवविज्ञान का ओर ना झुकल। बाप जइसन हिसाब आ क्षेत्रमिति के सवाल त जइसे बाप-बेटा में कंपीटिशन रहे। कागज-कलम के जरूरते ना पड़े। सेट थ्यौरी पर त अजितेश लाहिड़ी के लिखल किताब पूरा राज्य में पाठ्य पुस्तक जइसन चले। आखिर उहे 12 आ आई.आई.टी. दूनों एके साथ सुबेश पास कइलन। आई.आई.टी. रैंक भी अच्छा रहे। फेर उहे समस्या। सुष्मिता चहली कंप्युटर बाकिर सुबेश लीहलन मेकानिकल। बंबई आई.आई.टी. में उनकर भर्ती भईला के साथ-साथ सुष्मिता फिर से अकेला हो गइली। अंधकार से बाहर आवे खातिर ऊ आपन पुराना सर्टिफिकेट निकलली आ वकालत करे के तैयारी शुरू कइली। अजितेश सुष्मिता के रोआं-रोआं चिन्हस। ई औरत जवन काम एक बार ठान लिही ऊ कइए के रही। चाहे जे हो जाव।

पाँच

अजितेश के कबो मन ना रहे रायपुर जाये के। हालाँकि उहो सरकारी कॉलेज में लेक्चरर के आफर उनका कोलकत्ता वाला प्राइवेट कॉलेज से लाखों गुणा अच्छा रहे। बाकिर सुष्मिता के निर्णय के आगे उनकर कुछ ना चलल।

सुष्मिता शुरू में कोलकत्ता छोड़े के कल्पना भी ना कइले रहस। बाकिर पिछला तीन साल में कोलकत्ता के हर गली उनके काटे दउड़त रहे। प्रत्येक लोग जइसे उनके ओर ताकत रहे। जिनगी एतना भयानक हो सकेला–सुष्मिता के रोम-रोम ई महसूस करे लागल रहे। सुष्मिता के घर से निकले के मन ना करे। सुबेश के घर के पास ही एगो नर्सरी स्कूल में दाखिला करवले रहे सब। सुबह 10 से 2.00 बजे तक स्कूल रहे। एही समय में उनका घर के सारा काम निपटावे के पड़े। अजितेश सारा दिन बाहर ही बितावस। कबो-कबो दुपहर में आ जास। सुष्मिता के कबो दिन में सूते के आदत ना रहे। बाकिर रात में 9 से 10 के बीच उनका खातिर जागल असंभव रहे। दोसरा तरफ अजितेश 11-12 बजे के पहिले बिछावन पर ना जास। ओने 8 बजे के आगे जाग भी ना पावस।

जब सुष्मिता रायपुर जाये खातिर ईरादा पक्का कर लीहलीं तऽ अजितेश पहिला आ आखिरी बार शर्त रखलन। कहलन–

"ना हम कहीं ना जाइब कलकत्ता छोड़ के।"

"का रखल बा इहाँ कि ना जाइब?

"हमरा नइखे पता बाकिर हम ना जाइब।"

अजितेश के आँख में अइसन चमक पहिला बार देखले रहस सुष्मिता। शायद अजितेश के अइसने के इंतजार रहे सुष्मिता के अंतर्मन में। पल भर खातिर उनकर आवाज बंद हो गइल। जवना अजितेश से अतना दिन उनकर परिचय रहे, आज ऊ अजितेश ना लगलन। सुष्मिता के अजितेश से दुबारा नजर मिलावे के साहस ना भइल।

फेर तऽ ऊहे नारी के आखिरी अस्त्र के इस्तेमाल कर दिहली। भगवान औरत के हाथ में ई बड़ा ही अमोघ अस्त्र दीहले बाड़न। सुष्मिता का आँख से आँसू के धार बहे लागल। बाकिर ई का। आज अजितेश के हाथ सुष्मिता की ओर ना बढ़ल। मिनट भर का बाद तुफान शांत भइल। आँसू पोछत सुष्मिता कहे लगलीं–

"देखीं, अब हमरा से आउर नइखे सहात। अब हमरा में लड़े के ताकत नइखे बाचल। कोलकत्ता में साँस लीहल हमरा मुश्किल हो गइल बा। पिछला दू साल से हमार अवस्था का बा रउरा त जाने के भी जरूरत नइखी समझत। आज हम पक्का कह तानी। यदि एहबार आप रायपुर ना जाये के तइयार होखब त हमरा खातिर एकेगो रास्ता बाँचल बा।"

अजितेश का मन में एक बार त डर समा गइल। ई औरत कुछ भी कर सकेले। ऊ ठीक कर लीहले–

"चल शायद भाग्य में इहे बदल बा।" कहलन–

"ठीक बा। बाकिर हमार एगो शर्त बा। पहीले ऊ मामला उठावे के पड़ी।"

"हम त कब से तईयार बानी।"

साँझिए के ही दूनों जाना वकील के पास पहुँचलन आ मसौदा बन गइल। दोसरा दिन दूनो जाना के तरफ से कोर्ट में दरखास्त पेश हो गइल। कोर्ट एगो लमहर तारीख दीहलस विचार खातिर। कवनों बात ना। रायपुर बसेरा बाँधे के तइयारी शुरू हो गइल।

छव

शास्त्री भवन
कमरा संख्या 311 ए

नई दिल्ली

दरवाजा पर पीतल के प्लेट पर बस 311 ए खुदल रहे। ठीक 9.30 बजे सुबेश पहुँचलन। सफेद यूनीफार्म पहिनल चपरासी दरवाजा खोल के खड़ा रहे। कुर्सी पर बइठे के पहले सुबेश हाथ जोड़ के प्रणाम के मुद्रा में कएक सेकेंड खड़ा भइलन। ई संस्कार उनका में कइसे आइल उनको पता ना रहल।

ठीक 9.35 में पी. ए. एगो मोटा लिफाफा लेके घुसलन। हाथ बढ़ाके लिफाफा सुबेश लेहलन आ पी. ए. के चल गइला के बाद सुबेश कैंची से लिफाफा के मुँह कटलन। उनका चेहरा पर कुछ विचित्र भाव आवत-जात रहे। लागत रहे जइसे तेज गति से बिचारन के ज्वार-भाटा उनका अंदर आवत-जात बा।

लिफाफा का अंदर एगो चिट्ठी रहे–

प्रेषक
रजिस्ट्रार, परिवार न्यायालय
अलीपुर, कोलकाता

सेवार्थ
ज्वाइंट सेक्रेट्री
भारत सरकार

संदर्भ : केस सं. 76/1987

महोदय,

आदेशानुसार उपर्युक्त केस फाईल संलग्न बा।

भवदीय,

कृते रजिस्टार

साथ में एगो सील कइल लिफाफा रहे। सुबेश के हाथ तेजी से चले लागल। लिफाफा खोल के अंदर से कागज के मोटा पुलिंदा निकलल। कागज के हालत बुरा रहे।

हे भगवान! कइसन जमाना रहे। सुबेश का मुँह से अपने आप निकल गइल। पूरा केस रेकर्ड रहे। सुबेश इंटरकाम उठा के बोलले– "नो फोन, नो विजिटर।"

यानी कवनों फोन लाइन भा मिलेवाला के अंदर ना आवे दीहल जाव।

धीरे-धीरे सुबेश फाईल पढ़े लगलन। पहिलका पन्ना पर लिखल रहे श्रीमती सुष्मिता सान्याल पत्नी डॉ. अजितेश लाहिड़ी ई मुकदमा अपना पति डा. अजितेश लाहिड़ी के खिलाफ दर्ज कइले बाड़ी। अर्जी सामने राखल बा। ई अर्जी के मूल बात बा कि दूनो जाना के शादी हिंदू परंपरागत विधि से 26 दिसंबर 1983 में भइल बा। पिछला दू साल से उनकर पति के व्यवहार उनका प्रति ठीक नइखे। पति के उदासी, जरूरत से ज्यादा सहनशीलता, सब बात में राजी हो गइल जइसन हालत उनका सहल नइखे जात। अतः अदालत से प्रार्थना कइल जाता कि ओ लोग के शादी भंग करे के आज्ञा दीहल जाव। दोसर पाराग्राफ में लागता जज साहब खुद लिखले रहस–विपक्ष के नोटीस जारी कइल जाव। सुनवाई एक महीना बाद।

हस्ताक्षर

5-12-87

विपक्ष के नोटिस मिलला के रसीद सामने बा। श्रीमती सान्याल वकीलन के साथ कोर्ट में हाजिर बाड़ी। विपक्ष के तरफ से कवनो अर्जी नइखे। फिर भी विपक्ष के आउर एक महीना समय दीहल जाव।

हस्ताक्षर

10-2-88

पक्ष के वकील हाजिर। विपक्ष के तरफ से केहू नइखे। पक्ष के वकील सुनवाई शुरू करे खातिर दबाव दीहलन। विपक्ष के ताजा नोटिस भेजल जाव।

अगिला सुनाई 16/3/1988

हस्ताक्षर

16/3/1988

विपक्ष गैरहाजिर। पक्ष के वकील के जोरदार अपील सुनला के बाद अदालत के संदेह होता कि विपक्ष जानबूझ के गैर हाजिर हो तारन। ई पता चलता कि ऊ कॉलेज में अध्यापक बाड़न। उनकर सामाजिक प्रतिष्ठा के ध्यान में रख के अदालत एगो आखिरी चांस देता। लोकल थाना के द्वारा नोटिस भेजल जाव।

अगीला सुनवाई 6/4/88

हस्ताक्षर

6/4/1988

पक्ष के तरफ से गैर हाजिरी के दरखास्त पेश। विपक्ष–अजितेश लाहिड़ी उपस्थित। उनका तरफ से कवनो वकील नइखन। मुकद्दमा के

कागज मिलल बा स्वीकार कइलन। उनकर कहनाम बा कि परिवार अदालत के कार्रवाई बंद कमरा (In camera) होखे के चाहीं तबे ऊ कवनों जबाब दीहन। ऊ कवनों वकील नइखन रखे के चाहत।

चूँकि पक्ष गैरहाजिर बा। एह से सुनवाई के अगला तारीख आज से दू महीना बाद दीहल जाव।

हस्ताक्षर

एही तरे हरेक सुनवाई के तारीख पर कुछ ना कुछ लिखल रहे। सुबेश तेजी से आर्डर सीट बदलत गइले।

19/12/88

दूनो पक्ष की ओर से आवेदन पेश। बतावल बा कि दूनों पक्ष में समझौता हो गइल बा आ केस उठावे खातिर अर्जी करता।

चूँकि अइसन मामला में दूनों पक्ष के सोचे के मौका मिले के चाहीं कोर्ट 6 महीना के समय देता।

अगला सुनवाई 18/06/89 के मुकर्रर।

18/6/1989

दूनों पक्ष अनुपस्थित। आदेश खातिर 26/9/1989 मुकर्रर। यदि कवनों पक्ष के आपन विचार बदले के होखे त 1 महीना के अंदर आवेदन कर सकता।

26/9/1989

निर्णय पारित। केस फाईल बंद।

सुबेश का चेहरा पर स्पष्ट तनाव दीखत रहे। कवनों शक ना रहे कि मुकदमा उनका बाबा-माँ के बीच भइल रहे। अपना बचपन के याद करे के कोशिश कइलन सुबेश। रायपुर आवे का पहिले के सब बात धुआँ-धुआँ जइसन लागे। माँ-बाबा के संपर्क के बारे में कुछ

याद लायक कबो ना रहे।

बाबा हमेशा ठंडा किस्म के आदमी रहस। चौड़ा गोरा चेहरा पर हमेशा निश्छल मुस्कुराहट। मरल अवस्था में उहे मुस्कुराहट रहे उनका चेहरा पर। बाबा के लाश के पास खड़ा होके सुबेश उनका चेहरा पर उहे मुस्कुराहट देखले रहस। तब सुबेश दुर्ग में डी. एम. रहस। खबर आइल–

"बाबा के अटैक आइल बा।"

करीब 2 घंटा में ऊ पहुँच गइलन रायपुर। बाबा नर्सिंग होम के आई.सी.यू. में रहस। सुबेश के डाक्टर अंदर ले गइलन। माँ उनके माथा पर हाथ फिरावत रहलीं। बाबा कुछ बोले के कोशिश कइले। डाक्टर मुँह से वेन्टीलेटर हटवले। बाबा के मुँह के पास सुबेश कान ले गइले। सुन पवले–

"माँ के ख्याल रखीह बेटा...।"

सुबेश आउर कुछ ना सुन पवले। डाक्टर संगे-संगे मुँह पर आक्सीजन वाला वेन्टीलेटर फिट क दीहले आ कहले–

"अपने सभन थोड़ा बाहर जाईं।"

सुबेश बाहर आ गइले। बाकिर माँ ना अइलीं। ऊ टूल पर बइठके सीधा बाबा के निहारत रहस। बाबा के दाहिना हाथ अपना दूनो हाथ से पकड़ले रहस। लागत रहे खूब जोर देवे के पड़त बा उनकर हाथ पकड़े में।

ओकरा बाद सब कुछ जइसे अपने आप हो गइल। बाबा के लाश के साथ श्मशान तक माँ गइलीं। कवनों रोवल-पीटल ना। श्राद्ध-शांति का बाद जब सुबेश कहले–

"माँ, अब त बाबा ना रहलन तू हमरा साथ चलऽ।"

माँ मुस्कुरा पड़ली। अइसन मुस्कुराहट सुबेश उनका मुँह पर कबो ना देखले रहस। कहलीं–

"तू जानऽ तार नूं औरत पति के घर से एके बार जाला।"

फेर सुबेश के उदासी दूर करे खातिर शायद कह भइली–

"देखऽ इहाँ ई घर, ई शहर के साथ हमनी के बहुत कुछ जुड़ल बा। आ तू ठहरल सरकारी मुलाजिम। उहो इतना बड़ा पोस्ट पर। तू हमरा साथ केतना देर रहब आ अबही त हम सक्षम बानी। केस वेस भी त कुछ बड़ले बा। एही में दिन कट जाई। बाकिर रोज त तहरा साथ बात होइबे करेला चाहे तू कहीं रहऽ।"

हाँ सुबेश नियम से टेलीकांफ्रेंस पर माँ के साथ बात करस। माई उनका खातिर हमेशा नदी के स्रोत जइसन रहस। स्वच्छ, निर्मल बाकिर उर्जा से भरपूर। जइसे सुबेश के जीवन-प्राण।

आ बाबा– जइसे जेठ का दुपहरी में बरगद के गाछ। ओकरा नीचे बइठला पर सब थकावट, सब गरमी अपने आप दूर हो जाला।

सुबेश का याद आइल। एक बार आई.आई.टी. से पिकनीक पर ऊ सब बूंदी गइल रहे लोग। सितंबर रहे। धूप में गरमी एतना रहे कि सुबेश गाछ का नीचे बइठलन। थोड़ा समय में ही मन हल्का हो गइल। ऊपर नजर फिरल का गाछ रहे जइसे एगो बड़ा छाता– गोलाकार गोल-गोल पत्ता। जेने उनके नजर जाव ओह तरफ के पत्ता जइसे हिले लागे अपने आप। पूछे के पड़ल रहे– कवना चीज के गाछ ह? बरगद। सुबेश करीब घंटा भर उहाँ बइठल रहस। संघाती सब भी ओहिजा बइठ के खाइल लोग। लगही एगो सोता रहे। बतावल सब इहे नदी आगे जा के बड़ हो जाला। पहाड़ी नदी। छोट-बड़ पत्थर के बीच से छल-छल बहत जात रहे। जहाँ तनी बड़ पत्थर के पास गुजरे उहवाँ पानी के बुलबुला तइयार हो जात रहे। आहा! रे। नदी के सौंदर्य ई पत्थरन से कई गुना बढ़ जात रहे।

आज जब बाबा के मरला के बाद माई के अकेला छोड़ के सुबेश लवटत रहस त न जाने कइसे ऊ गाछ आ नदी वाला दृश्य बार-बार उनका याद आवत रहे।

सात

हठात अलार्म के आवाज से सुबेश के ध्यान कंप्युटर स्क्रीन पर चल गइल। स्क्रीन पर 12-30 बजे के प्रोग्राम तय देखावत रहे। ऊ जल्दी से फाइल बंद कइलन। लिफाफा के ड्रावर में रखके चाभी लगवले। ड्रावर के चाभी अपना आदत के खिलाफ पाकेट में रख के मंत्री जी के कमरा की ओर प्रस्थान कइले।

मंत्री जी के कमरा पहिला मंजील में रहे। उहाँ पहुँचे में ठीक 45 सेकेंड लागल सुबेश के। 12.30 में मंत्री जी के सामने रहस।

हाँ सुबेश जी बतावल जाव प्रोजेक्ट के बारे में।

"सब कुछ समय से हो रहल बा। आशा करतानी सदन के अगिला सत्र में नया मसौदा पेश क दीहल जाई।"

"ओकरा पहिले हम चाहतानी कि एह विषय पर खुला बहस होखे। रउवा अइसन करीं कि अपना प्रोजेक्ट रिपोर्ट के कॉपी हमरा लगे एह सप्ताह का अंत तक दे दीं। फेर हम कुछेक शहरन में एह विषय पर आलोचना शुरू करा दी। एह बीच नया तलाक कानून के मसौदा आप तैयार कर लीं। जइसन हमनी के प्लान बा।"

"हाँ सर।"

सरकारी तंत्र के गजब तौर-तरीका होला। चाहे अफसर जेतना बड़ काहे ना होखे अपना बॉस के सामने हाँ सर, जी सर छोड़ के कुछ ना बोलस। फेर नीचे वाला के विचार विवेचना से ही सरकार चलेला। ऊपर वाला खाली एगो आइडिया दे देले। नीचे वाला सारा कुछ तैयार करीहें। बाकिर आलोचना के समय पर ऊपर वाला के हर प्रश्न के

जवाब खाली हाँ सर होखे के चाहीं। बाहर से लागेला कि अरे ई त बड़का मखनबाज बा। हमेशा हाँ सर, हाँ सर, कहत रहेला। बाकिर एह हाँ सर, के पीछे ओह अधिकारी के दिमाग पूरा तरह बॉस के बात सोचत रहेला। सरकारी तंत्र के सफलता एही पर निर्भर बा कि हर ऊपर वाला के विचार के मंथन नीचे वाला के दिमागी कंप्युटर केतना सटीक कर रहल बा।

सुबेश अपना कमरा में अइलन। कंप्युटर के डिक्टेशन देबे लगलन। कंप्युटर सुबेश के डिक्टेशन 85-90 प्रतिशत तक सही-सही समझ के टाइप करत जाव। बाकी ऊ खुद ठीक करत जास। करीब 45 मिनट बाद एगो दू पेज के प्रिंट आउट निकललन। विषय के बारे में बहुत सोच विचार के लिखलन–

"एकीसवीं सदी में परिवार आ तलाक।"

सारा दिन के व्यस्तता के कारण सुबेश भूल गइले कि कवनों फाईल के संपर्क उनका खून से जुड़ल बा। शाम में 4 बजे उनका ओह दिन के काम के लेखा-जोखा (Reconcillation) के समय रहे। उनकर हाथ अपने-आप पाकेट में पहुँच गइल। चाभी से ड्रावर खोल के ऊ फाईल निकललन। अबकि बेर ऊ फाईल ना खोल के साथ वाला छोटा लिफाफा खोललन। लाला स्याही से लिफाफा पर लिखल रहे Exibit 1/1। ओह लिफाफा के अंदर 1987 साल छपल एगो डायरी निकलल। डायरी के अंदर में कागज के रंग पियरा गइल रहे। बड़ा-बड़ा अक्षर देखिए के एके बार में उनका बुझा गइल माई के डायरी ह। उनका चेहरा पर भाव बदल गइल। शुरू के तीन चार पन्ना खाली रहे। फिर लिखल शुरू भइल। बीच-बीच में एक-दू पन्ना छोड़ के लिखल मिलल।

25-12-1986

हमरा दिन भी याद बा। ओह दिन गुरुवार रहे। गोलू के दूसरा

जन्मदिन मनावे खातिर हमरा घर में माई-बाबूजी आ बहिन भी अपना दूगो बच्चन का साथ आइल रहलीं। एह तरह के आयोजन हमरा घर में पहिला बेर रहे। पड़ोस के तीनों परिवार के लड़िका साँझे से ही कचमच कइले रहस। 6 बजे केक काटे के रहे। बगल के तीनों घर के औरत भी आ गइलीं। सब लोग कहे लागल अब तऽ केक काटल जाव। बस झमेला हो गइल–छुरी नइखे। हमरा तऽ जइसे पसीना आ गइल। तबे सीमा कहली–

"हम अपना घर से ले आवतानी।"

उनका गइला अभी 1 मिनट भी ना भइल कि हमरा बुझाइल देरी होता। सब लोग केक के सामने खड़ा बा। हम अपना शादी वाला लहंगा पहीनले रही। ऊ इतना भारी रहे कि एक हाथ से उठा के चले के पड़े। हम सीमा के घरे चल पड़नी। गेट भीड़ावल रहे। दरवाजा ठेलत भइल कि हठात हमरा जइसे बिजली के झटका जइसन लागल। दरवाजा खुलला के साथ हमार शरीर उनका संग टकरा गइल। हम गिरे के डर से उनकरे शरीर पकड़ लेले रहनी। संगे-संगे हट के खड़ा भइनी सन। दूनो आदमी के नजर कुछ देर तक एक दूसरा में अटक गइल। हमही सीमा के आवाज दहिनी। भीतर से सीमा हाथ में एगो छुरी लिहले निकलली।

"अरे दीदी रउरो आ गइनी। चली।"

हम मुड़े के पहिले रजत की ओर देख के कहनी ...

"रउरा काहे नइखी चलत। आई ना सब लोग बा।"

"काहे सब लोग ना रही, त हमरा के ना बोलायेब भाभी।"

रजत का आँख में एगो विचित्र तरह के शैतानी रहे। कुछ सोचे बोले के समय ना रहे। हम सीमा के साथ अपना घर में घुसनी। केक कटाइल। लड़िका गवलन सन हैपी बर्थ डे टू यू...। बैलून फूटे के आवाज होखे लागल बाकिर हमार आँख त जइसे कुछ दोसरे ढूढ़त

रहे। देखनी पीछे खड़ा बाड़न रजत। हम लड़िका के माई के रूप में केक के टूकड़ा सबका मुँह में देत रहनी। थोड़ा हिचक के उनका मुँह में डाले गइनी त एगो फुसफसाहट सुनाइल–

"गजब सुंदर बानी रउवा।"

हम केक के टुकड़ा उनका मुँह में डाल के मुस्कुरा पड़नी।

31 दिसंबर, 1986
रात्रि 8.30 बजे

हमरा किहाँ सीमा आ रजत एके साथ आइल लोग। अजितेश भी रहलन। बातचीत जइसे पड़ोसी से होला–होत रहे। बाकिर, हमरा मन में जइसे चोर रहे। हमरा रजत से आँख मिलावे में असुविधा होत रहे। हम उनके ओर निहारे के पहिले सीमा आ अजितेश की ओर देखत रहनी। एकबार रजत से आँख टकराईल त उनका आँख में एगो गजब किसिम के शरारती निमंत्रण महसूस भइल। पूरा शरीर में विचित्र किसिम के सिहरन दउरे लागल। हम संगे-संगे चाय ले आवतानी बोल के रसोई में घुस गइनी। ई तय भइल कि नया साल हमनी के डायमंड हारबर में मनावल जाई।

1 जनवरी, 1987
बियफे
डायमंड हारबर

जहाँ के नाम सुन के लागेला कि समुद्र के बंदरगाह जइसन जगह होई। बड़ा-बड़ा जहाज देखे कि मिली। बाकिर अइसन कुछ ना रहे। मछली पकड़े वाला छोट-छोट नाव छोड़ के कुछ ना रहे। पूछला पर पता चलल कि इहाँ से समुद्र काफी दूर बा। नदी के किनारे जाये के कवनों उपाय ना रहे। चारों ओर कीचड़ ही कीचड़। ऊपर से मछली

के गंध। हमरा त मुँह से निकल गइल–

"रजत जी, इहे दिखावे खातिर ले अइनी ह सभे।"

अजितेश बात कटलन

"रजत भाई चल ना एगो बढ़िया होटल बा इहाँ–सागरिका। ओही जा खाइल पीअल जाव।"

फेर हमनी का सागरिका होटल पहुँचनी। बढ़िया बनल रहे होटल। अबही नये रहे। साफ-सुथरा भी रहे। नीचे एगो बच्चन के पार्क रहे। हमरा पार्क देख के बड़ा आनंद होला– अभी भी। हम सीमा आ बच्चन के लेके पार्क में चल गइनी। सामने झूलुवा रहे। हम लोभ ना संभार पवनी। करीब आधा घंटा बाद रजत आ गइलन।

"का होता सीमा? चल उहवाँ खाना टेबुल पर लाग गइल बा। जल्दी आव।"

सीमा साड़ी संभारत बुदबुदात झूलवा से उतरके चल पड़ली। बच्चा तऽ दउड़ के उनका पीछे लाग गइले सभन। सीमा आ बच्चन के आगे करके रजत हमरा साथ हो गइलन।

"का भाभी कइसन लागता?"

"नइखे मालूम।"

"अब त मुँह खोलीं। हमरा मालूम बा कि रउवा मन में का बा?"

"जब मालूम ही बा त पूछत काहे बानी?"

"भाभी हमरा आपके बिना रहल नइखे जात।"

"मालूम बा त कि हम शादीशुदा बानी आ बच्चा भी बा।"

"से त हमरो बा बाकिर रउवा के देखला के बाद सब कुछ भूला गइल बा।"

सामने होटल के सीढ़ी रहे। हमरा बुझाइल रजत के शायद ध्यान नइखे ओह ओर।

"सामने देखी ना त ठेस लाग जाई।"

"रउवा संभाले खातिर बानी नू।"

"बात त खुब बनावतानी। कुछ गुणों बा कि अइसहीं?"

"चाँस तऽ दीं। फिर देखब का बा, का नइखे।"

आगे बात रुक गइल। हमनी का सामने बड़ा सा टेबुल पर अजितेश दीखले। टेबुल पर खाना लागल रहे उनका चेहरा पर चिर-परिचित शांति लउकत रहे।

2 फरवरी, 1987
सोमार

अजितेश करीब 11 बजे कॉलेज गइले। गोलू के जबर्दस्ती खिया के, सुता के, नहाये के तइयार होत रहनी। तबे फोन के घंटी बाजल। फोन उठवनी। ओने से आवाज आइल–

"हलो भाभी। रजत बोलतानी।"

"बोलीं।"

कवनो जबाब ना आइल। फिर कहनी–

"का भइल? चुप काहे हो गइनी।"

"रउवा बुरा त ना नूँ मानब।"

"काहे बुरा लागेवाला बात करे के बा का?"

"अरे, अरे। अइसन मत सोंची। हमरा कहे के मतलब रहल..."

"मतलब त अच्छा नइखे बुझात। खैर जब मन में आइल बा त कहिए दीं।"

"भाभी, आप बड़ी सुंदर बानी, आ जतना बाहर से बानी अंदर में कहीं ओहू से ज्यादा।"

"आह...।"

हम जान बूझ के थोड़ा नखरा कर के कहनी।

"भाभी हम रात में सुत नइखी पावत।"

"सीमा नइखीं का?"

"उनकर त नाम मत लीं। ना जाने कवना नक्षत्र में हमनी के शादी भइल रहे।"

"अच्छा खासा त सुंदर बाड़ी बेचारी।"

"बेचारी ऊ नइखी। ऊ हमरा के बेचारा बना के रखले बाड़ी। काल डायमंड हारबर से लवटला पर माथा दरद ले के सुत गइली।"

हमरा हँसी आ गइल। हँसते-हँसते कहनी–

"तबे नू बाबू का भाभी इयाद आ गइली ह।"

"भाभी खाली मजाक मत करीं। हमार जान निकल रहल बा।"

"सौरी डियर, वेरी सॉरी।"

–हम मूड में आ गइल रहनी।

"भाभी। प्लीज अइसन मत कहीं। हमरा दुख पहुँचता।"

"अभी कइसन बाड़ी सीमा।"

"उनकर बात मत उठाई भाभी हमार जिंदगी नरक बना के रखले बिया ऊ औरत।"

"अच्छा त बताई का कहे के चाहऽतानी।"

"भाभी नइखे बुझात कइसे कहीं? आप कहीं बुरा न मान लेम।"

"फेर उहे बात। अरे जब भाभी पर विश्वास बा तऽ बोलीं।"

"विश्वास त अतना बा जतना अपनों पर नइखे बाकिर कुछ बाते अइसन बा कि कहे में संकोच होता।"

"हम अब फोन रख दे तानी।"

"ना भाभी, ई मत करी। हमरा के कम से कम दिन में एक बार बात करे के अनुमति दिहल जाव।"

"मंजूर। अब रखीं।"

"भाभी। आइ लव यू भाभी!"

"आई टू..."

– ना जाने हमरा मुँह से कइसे निकल गइल।

एक बार टेलीफोन के सिलसिला शुरू का भइल जइसे नशा चढ़ गइल। जब दिन के साढ़े ग्यारह बजे हमार ध्यान टेलीफोन पर चल जाव। पहीले त एने ओने के बात होखे फिर सीमा के लेके रजत के चालीसा। सीमा के नाम सुनते-सुनते रजत जइसे खउले लागस। हमरा बड़ा मजा आवे। हम ई सोचे लगनी कि शायद रजत से संबंध बढ़ा के हम उनका जिंदगी में थोड़ा ऑक्सीजन दे तानी। हो सकता कहीं ना कहीं हमरा मन में अइसन भावना रहे कि सीमा के हाथ से हम रजत के छीनऽतानी।

8 फरवरी, 1987

एतवार

रोज के तरह काल्ह भी ठीक 11.30 बजे रजत के फोन आइल। करीब आधा घंटा तक बात होत रहल। बात के कवनो विषय त रहेना बाकिर खतम होखे के नाम ना लेव। अंत में हमीं बतवनी कि रविवार के फोन मत करब। अजितेश घर में रहिहन।

रजत कह भइलन–

"भाभी आप एक बार आधा घंटा खातिर बाहर ना आ सकऽतानी।"

हम कहनी–

"कइसे निकलब बताई। घर में ऊ रहिहन। फेर गोलू भीतऽ बा।"

"गोलू के भइया का पास रखके आधा घंटा खातिर निकल आईं ना, भाभी।"

"हम कोशिश करब। बाकिर आशा नइखे बुझात।"

"हम ठीक चार बजे गोल पार्क बस स्टॉप पर इंतजार करब।" —एतना कह के रजत फोन काट दिहलन।

तब से आज तक हमरा मन में उथल-पुथल चलत रहे। अइसे तऽ शादी के बाद घर से निकले में कवनों रुकावट ना रहे। बाकिर आज निकले के उद्देश्य दोसर रहे। एह से हमरा मन में बड़ा ही बेचैनी महसूस होत रहे। कइसे कहीं, ठीक ना कर पावत रहनी। आखिर में खाये का समय अजितेश से बोलनी–

"आज शाम के रउवा कहीं जाये के बा?"

"ना तऽ। काहे कुछ बात बा का?"

अजितेश उल्टे सवाल कइलन।

"ना अइसन कुछ नइखे। दू एगो सामान ले आवे के रहल ह। यदि गोलू के थोड़ा देर रखती अपना पास तऽ गड़ियाहाट जइती हम।"

"ठीक बा, चल जइह।"

हम तैयारी में लाग गइनी। साड़ी ही पहिन के गइल ठीक होई। बाकिर कवना रंग के पहिनब तय ना कर पावत रहनी। एही बीच खाना खा के अजितेश सुत गइलन। लगही गोलूओ सूत गइल। साड़ी पहिनत-पहिनत आलमारी में रखल सलवार-कमीज पर नजर पड़ल। बहुत दिन से ना पहिनले रही। का मन में आइल। साड़ी उतार के उहे पहिने लगनी। शादी का बाद शरीर पर थोड़ा मांस तऽ आइले रहे। सलवार-कमीज के फिटिंग थोड़ा सकेते रहे। आएना में देखत-देखत थोड़ा देर खातिर भुला गइनी कि हम शादी-शुदा बानी। प्रेम के आकर्षण अइसही होला।

पौने चार बजे में आज कुछ ज्यादा ही समय लागल। देखनी अजितेश सुतले-सुतले किताब पढ़तारे आ गोलू सुतल बा। हम उनका ओर बेदेखेले बोलनी–

"हम आव तानी। दरवाजा बंद कर ली।"

निकलत-निकलत उनकर हल्का आवाज सुनाइल–

"अच्छा।"

गोल पार्क पहुँच के एने-ओने देखे लगनी। रजत के पता ना रहे। बाकिर हमरा मन में चोर रहे। लागत रहे सभे हमरे ओर देखऽता। घड़ी देखनी–अबही चार बजे में पाँच मिनट कम रहे। दिल के धड़कन बढ़ल जात रहे। सोचे लगनी बेकार के चक्कर में पड़ल बानी। बियाहल औरत खातिर अइसन काम जंजाल बा। ना जाने कब केकर नजर पड़ जाई।

सोचलीं अगिला बस से लौट जाएब। इहे सोच के सड़क के दूसरा तरफ आ के खड़ा हो गइनी। निगाह आवे वाली बसन पर रहे। तबही ओनिए से ऊ आवत लउक गइलन। हमार सारा सोच कपूर जइसन उड़ गइल। जिन्स में दबावल धारीदार टी शर्ट। पैर में स्पोर्टस सू। लमहर-लमहर डेग बढ़ावत ऊ एकदम से हमरा सामने आ के खड़ा हो गइलन। हमरा संभले के भी समय ना दीहलन। हमरा मुँह से कुछ निकले एकरा पहीले उनके आवाज गुंजल–

"सॉरी भाभी, थोड़ा देर हो गइल हऽ।"

हम खिसियाये के भान कइनी–

"ठीक बा। भेंट त हो गइल ना। अब हम जातानी।"

"अरे-अरे! एहतरे सेवक पर नाराज होखब तऽ हमार का होखी। केतना देवी-देवता के मनवला पर तऽ आज हमार देवी दर्शन देली ह। थोड़ा दया करीं एह अधम पर!"

हाथ जोड़ले रजत के चेहरा के भाव देख के हमरा हँसी छुट गइल। हँसी दबवला के बावजूद हम आपन मुस्कुराहट ना छुपा सकनी। मुस्कुरात-मुस्कुरात बोलनी–

"अच्छा। जल्दी बताईं काहे खातिर बोलवनी ह।"

"चली भाभी सामने कॉफी पीयत-पीयत बातो कर लीहल जाई।"

कहत-कहत रजत मुड़ गइलन। हम भी उनके पीछे-पीछे सामने कॉफी हाउस की ओर चल पड़नी। नीचे हॉल में ना घुस के रजत सीढ़ी

से ऊपर चढ़े लगले। ऊपर तल्ला में केबिन बनल रहे। एगो केबिन के पर्दा बेयरा हटाके अंदर जाये के इशारा कइलस। रजत हमरा के पहीले घुसे के इशारा कइलन। हमरा बइठला के बाद ऊ सामने वाला पर बइठलन। तबही बेयरा दू गिलास पानी रखके ऑर्डर खातिर खड़ा हो गइल। रजत दू ढोसा आ कॉफी कह के ओके विदा कइलन। ओकरा हटत भइल कि ऊ फटाक से उठके हमरा पास वाला कुर्सी पर बइठ गइलन।

हमरा अंदर तऽ पहिलहीं से हलचल होत रहे। उनका पास में अइला से करेजा धक-धक करे लागल। हम कुछ आगे सोची एकरा पहले ऊ अपना मजबूत बाँह में हमरा के कस लीहलन। हमार कसमसाईल देख के ऊ छोड़ दीहलन। हमरा अंदर जइसे खालीपन भर गइल। हम टुकुर-टुकुर उनके ओर निहारे लगनी। तबही उनकर हथेली हमरा कँधा पर पहुँचल। हमार गर्दन अपने आप घुम गइल। अब ऊ अपना दूनो हाथ से हमार सर पकड़ लीहलन– धीरे-धीरे उनकर मुँह हमरा ओरी बढ़ आइल। हमरा अपना शरीर पर कवनो बस ना रहे। उनकर ओठ हमरा ओठ पर पड़त भइल कि हमार मुँह अपने आप खुल गइल। उनकर जीभ हमरा मुँह के अंदर कब चल गइल हमरा पता ना चलल। साँस रुके लागल तब ज्ञान फिरल। हम मुँह अलग करके कहनी–

"चलऽ सामने बईठऽ।"

रजत अच्छा बच्चा के तरह उठ के सामने बइठ गइलन।

तबही बेयरा ढोसा लेके घुसल।

0 0 0

घर में घुसनी तऽ सब कुछ सामान्य दीखल। अजितेश गोलू के लेके टी.वी. देखत रहस। हम सीधे बाथरूम में घुसनी। मुँह-हाथ धोके रसोई में गइनी। सूजी के हलुवा बनवनी। दू प्लेट में लेके उनका पास

आके बइठनी। दूनों के ध्यान टी.वी. पर रहे। अजितेश खात-खात– कहलन–

"वाह! वेरी गुड।"

ना मालूम ई ऊ हलुवा खातिर कहलन आ कि टी.वी. के सीन खातिर।

खैर। हमरा मन के चोर जवन रहे ओकरा शांति भइल।

रात में हम आदतन 10 बजे बिछावन पर चल गइनी। बाकिर नींद तऽ जइसे आवे के नामे ना लेव। 11.30 बजे अजितेश आके पास में लेटलन। नीम बेहोशी के हालत में हम अजितेश के अंकवारी में भर लीहनी। बाकिर ऊनकर कवनों प्रतिक्रिया ना भइल। अब हमार नींद पूरा तरह खुल गइल रहे। शरीर के उत्तेजना दबावे से बाहर हो गइल रहे। हमार हाथ उनके शरीर सहलावे लागल। ऊपर से घूमत-घूमत नीचे पहुँच गइल। फिर तऽ आज तक जवन ना भइल रहे उहे भइल। हम अजितेश के नीचे रखके आपन दूनो पैर उनके दूनो बगल में रोप दीहनी।

कब नींद आ गइल पता ना चलल। सबेरे आँख खुलल त कमरा में बाहर से हल्का-हल्का रोशनी आवत रहे। अजितेश के गोरिया देह पर करिया-करिया बाल बड़ा लुभावना लागत रहे। नीचे नजर गइल। एक बेर त चूमे के इच्छा भइल बाकिर न जाने कइसे अपना के कंट्रोल क लीहनी।

आठ

सुबेश खातिर डायरी के एक-एक शब्द दिमाग में सोचे के शक्ति छीनले जात रहे। ऊ किताब में पढ़ले रहस अइसन स्थिति गाँजा या चरस पीयला से होला। एक-एक लाईन दू तीन बार पढ़स। तबही 6.30 बजे के अलार्म आवाज दीहलस। माने अब उनका ऑफिस से निकले के समय हो गइल। समय से पहीले ऑफिस से निकलल आ समय से बाद में ऑफिस में रहल-दूनो बढ़िया ऑफिसर के रुतबा के खिलाफ समझल जाला। डायरी जहाँ तक पढ़ले रहस उहाँ एगो कागज डाल के ओके लिफाफा में रखलन। फेर ओकरा के एगो बड़ा लिफाफा में भरलन। फाइल के साथ ड्रावर में रखलन। तबही उनकर नजर कैलेंडर पर गइल। आज तऽ शुक्रवार बा। माने दू दिन छुट्टी। फेर ड्रावर खोललन। ओमे से डायरी वाला लिफाफा निकललन। ओकरा के ब्रीफकेश में रख के बंद कइलन। फेर कंप्युटर लॉग ऑफ करके घंटी दीहलन। चपरासी आके ब्रीफकेश उठाके चल पड़ल। पीछे-पीछे शास्त्री भवन के लमहर कॉरीडोर लाँघ के सीढ़ी से नीचे उतरलन। गेट का सामनही गाड़ी खड़ा करके ड्राइवर खड़ा रहे। सुबेश के देखके गेट खोललस। पहीले ऊ बइठलन। ओकरा बाद चपरासी उनका पास ब्रीफकेश रखके सलाम कइलस। ड्राइवर गाड़ी के गेट बंद करके सामने से आके अपना सीट पर बइठल।

ई रोज के रूटीन रहे। घरे पहुँच के भी सब काम के रूटीन जइसन ही रहे। सुबेश के पत्नी राममनोहर लोहिया अस्पताल में प्रशासक रहली। एम.बी.बी.एस. कइला के बाद ऊ सिविल सर्विस परीक्षा

देके डि विभाग में क्लास वन सर्विस ज्वाईन कइली। एह अस्पताल में उनकर डेपुटेशन पोस्टिंग रहे। बाकिर, ईमानदारी आ दक्षता के कारण पिछला 10 साल से ऊ एही में कार्यरत रहस।

सुबेश के एके गो संतान रहे– लड़की। ऊ अमेरिका के नामी कॉलेज में रिसर्च करत रहे। अमेरिका सरकार के स्कालरशिप लेके मैत्रेयी उहाँ भर्ती भइल रहली। इहो एगो विचित्र संयोग रहे कि ऊ देखे में एकदम अपना दादी जइसन लागे। सुबेश अपना माँ के 20 साल वाला फोटो आ मैत्रेयी के फोटो एगो फ्रेम में एक साथ रखले रहस। माँ के ध्यान आवत-आवत, सुबेश के चेहरा पर एगो उदासी फइल गइल। संगे-संगे मोबाइल से नंबर मिलवले–

"माँ!"

"हाँ सुबेश। काऽ हाल बा हो?"

"ठीक बा। तू कइसन बाड़ू?"

"हमरा का होखे के बा। बिल्कुल भला-चंगा बानी। मैत्रेयी से बात भइल रलऽ?"

"हाँ, आज ही सुबह फोन कइले रलऽ।"

"कइसन बिया ऊ?"

"फर्स्ट क्लास। जइसन एह उम्र में होखे के चाहीं।"

माँ आ मैत्रेयी के संबंध सुबेश के मालूम बा। रिश्तन के राह भी विचित्र होला। मैत्रेयी आ माँ कबो भी लगातार छः महीना एक साथ नइखे रहल। बाकिर दूनो के बीच प्रगाढ़ संबंध बा। सुबेश जवना परिस्थिति में पलल-बढ़ल रहस ओमे इंसानी संबंध के कुछ ज्यादा अहमियत ना रहे। माई घर में अनुशासन के प्रतीक रहस। बाबा जइसे बाहरी जीव। माँ-बाबा के कबहु खुल के हँसल-बोलत सुबेश का नजर ना पड़ल रहे।

सुबेश का हल्का-हल्का याद बा। रायपुर आवे का दू साल पहीले

के होली रहे। बाबा के तरह सुबेश भी कुर्ता-पायजामा पहीनले रहस। माँ भी सादा साड़ी पहिनले रहली। बाबा एगो बाल्टी में रंग बना के तैयार रहस। जइसे माँ निकलली पूरा बाल्टी उनपर डाल दीहलन। फिर त दूनो जाना में छीना-झपटी शुरू हो गइल। बाबा के भी कपड़ा लाल हो गइल। सुबेश का लागल जइसे दूनो जाना में झगड़ा होता। ऊ रोये लगलें। माँ दउड़ के ओके गोद में लेके जोड़ से छाती से दबा लीहली। सुबेश का बड़ा ही अच्छा महसूस भइल रहे।

शनिचर सुबह नाश्ता लेके सुबेश पढ़े वाला कमरा में गइलन। पत्नी अपना काम पर चल गइल रहली। सुबेश ऑफिस वाला ब्रीफकेश खोललन। चोर नजर से चारो ओर देख के ऊ डायरी निकललन। पन्ना पलट के आगे पढ़े लगलन–

12 फरवरी, 1987
बियफे

ठीक 11.30 बजे हम फोन का लगे रहनी। फोन बाजल। हमरा बोले के पहीलही आवाज आइल–

"हलो भाभी।"

"रौंग नंबर।"

कहके हम फोन रख दीहनी।

सामने से अजितेश पूछलन–

"केकर फोन रहल।"

"ना मालूम। रमेश भाई के पूछत रहल ह केहू।"

–कह तऽ दीहनी बाकिर हमरा दिल के धड़कन तेज हो गइल। डर भी लागत रहे कहीं उनकर फोन अजितेश का हाथ में पड़ गइल तऽ का होई?

हम ध्यान बटावे खातिर गोलू के खियावल शुरू कर दीहनी। ई लड़का खाये का नाम से ही रोये-पीटल शुरू कर देला। ओकर चिल-पें सुनके अजितेश के ध्यान टेलीविजन से हट गइल। उ कहले–

"का होता ई?"

"एह तरह ना कईला से खाई का। रउरा का पता एके खिआवे खातिर का-का करे के पड़ेला।"

एने गोलू त चुप होखे के नाम लेत रहे। बाप के उपस्थिति में ओकरा सपोर्ट मिली, जानत रहे। हम खीझ के कहनी–

"ले जाई न। तनी घुमा के ले आईं बाहर से। आ एक पैकेट दूध भी लेते आएब।"

अजितेश गोलू के गोद में लेके निकल गइले। हम संगे-संगे टेलीफोन पर झपट पड़नी। नंबर मिलावत-मिलावत ओने से गंभीर आवाज सुनाइल–

"रजत हीयर।"

"काहे के फोन कईले रहलऽ ह?"

हमरा मुँह से अनायास तू निकल गइल।

"इहो कवनो पूछे के बात बा। काल रात भर नींद ना आइल।"

"काहे सीमा ना रहस?"

–हम व्यंग कइनी।

"फेर ओ औरत के नाम ले तानी, भाभी। ऊ चुड़ैल तऽ हमरा जान के दुश्मन बीया।"

हम आपन हँसी ना दबा पवनी। औरत खातिर दोसरा औरत के शिकायत से बड़ा आनंददायी बात होला आ ओकरा पति के मुँह से सुने के आनंद तऽ असीम होला।

रजत के झुंझआईल आवाज आइल–

"हँस ली भाभी। चिड़ई के जान जाव, लड़िका के खेलौना।"

"आहा रे! बेचारा चोंऽ चोंऽ!!!"

"भाभी ऽऽ प्लीज।"

"अब तऽ लागता कुछ करही के पड़ी।"

"भाभी अभी भी सोचते बानी। हमरा तऽ एक-एक मिनट एक युग जइसन लागता।"

"अच्छा सुनऽ। अभी अजितेश आ जइहन। फोन रखतानी।"

"फेर कब फोन करब।"

"रउरा फोन मत करब। हम खाली रहला पर मिस कॉल दीहब।"

"बाकिर एगो आग्रह बा।"

"बाय-बाय।"

"एगो किस भाभी– प्लीज।"

हम चुंबन के आवाज देके फोन रख दीहनी। थोड़ा समय लागल सामान्य होखे में। जइसे शरीर एगो तीव्र रसायनिक प्रतिक्रिया से गुजरल रहे।

14 फरवरी, 1987
शनिचर

हमार आदतन सुबह-सुबह नींद टूट गइल रहे। अजितेश दोसरा तरफ घुम के गोलू पर हाथ रखले सुतल रहस। ई उनका घोर निद्रा के समय रहे। हम उठके बाथरूम की ओर बढ़नी कि टेलीफोन के घंटी बाजल। हमार तंद्रा भंग हो गइल। हम फटाक से फोन उठवनी। ओने से उहे रहस–

"हैपी वेलेन्टाईन डे, लव।"

हमरा रियेक्ट करे में पल भर लागल–

"सेम टू यू।"

ओने से एगो किस के आवाज आइल। हमहूँ ओइसही आवाज

दीहनी। अईसहूँ सुबह में आदमी के मूड बड़ा ही रोमांटिक रहेला आ हमरा पर त रजत के रंग चढ़ चुकल रहे।

"हाँ डीयर। आज कइसे मिलन होई?"

"काहे? तहार हमरा घर में आइल मना थोड़े बा।"

"घर में त हमार भाभी रहेली। आज तऽ हमरा अपना सुष्मिता से मिले के बा।"

रजत के मुँह से पहिला बेर सुष्मिता सुनके हमार रोआँ सिहर गइल।

"तऽ तूहीं बताव, कहाँ मिलल जाव?"

"ओही जा जहाँ पिछला बार मिलल रहनी स।"

"केतना बजे?"

"तू बताव।"

"दू बजे। बाय।"

फोन रखके हम तेजी से सोचे लगनी। फेर सुबह वाला घर करचा शुरू हो गइल। नाश्ता बनावल। खाना बनावल। गोलू के नहवावल। कपड़ा प्रेस कइल। अजितेश जाये के तैयार होत रहस। तबही धीरे से पूछनी–

"कब तक आवे के बा?"

"कवनो प्रोग्राम बा का?"

सवाल के जबाव सवाल अजितेश के लक्षण बा। बाकिर अबही हमरा नाराज होखे के वक्त ना रहे। आपन क्रोध दबा के कहनी–

"ना एगो ब्लाउज सीये के दीहले बानी। ले आवे जाये के बा। दू-तीन बजे।"

"हम 5 बजे के पहीले ना लवटब। तू चाभी ले ले जइहऽ।"

–कह के अजितेश निकल पड़लन।

एकर मतलब गोलू के लेके ही जाये के पड़ी। का करब निषिद्ध

फल खाये के लालच बड़ा तीव्र होला। ओकरा खातिर आदमी सब सह लेला। आत्मसम्मान भी भूल जाला।

गोलू के खिया-पिया के सुता दीहनी। हम बाल में शैंपू करके ड्रायर से सुखावे लगनी। हल्का मेकअप करके के आयना में देखे लगनी। हाथ उठा के बगल पर नजर दीहनी। हम ऊ सेव ना करी। लाल आभा लींहले ऊहाँ के केशन से हमरा लगाव रहे। सेंट छिड़क के ब्लाउज पहिननी। आज आपन पसंद के रंग वाला साड़ी पहिन के जाएब– ठीक कहले रहीं। एकर एगो बड़ा कारण रहे हमरा छाती के आकार। जब देखीं तऽ भगवान से सवाल करी–अरे भगवान! ढेड़-दू सऽ ग्राम मांस दे देत तऽ कवन नुकसान हो जाईत। ना होईत त हमरे कुल्हे से निकाल लेतऽ।

हमार नितंब कुछ ज्यादा ही भारी रहे। साड़ी पहिनला से ऊ आउर झलके लागे आ छाती के छोटापन ढंक जाव। अईसहूँ गोलू के भइला के बाद कमर के माप भी बढ़ गइल रहे। साड़ी ही अइसन ड्रेस बा जवना के जइसे चाहल जाव पहीनल जा सकेला। ढके वाला जगह के ढक लेला आ उभारे वाला के उभार देला।

पूरा ड्रेस पहिन के देखनी तऽ अपने पर प्यार होखे लागल। आज रजत के भी बुझा जाई कि कवनो औरत से पाला पड़ल बा। अपना पर गर्व महसूस होखे लागल। कइगो शादीशुदा औरत के जिंदगी में अइसन प्यार के मौका मिलेला? खैर रजत के निराश ना होखे के पड़ी।

गोलू के हाथ पकड़ले गोल पार्क अइनी। ढाई बजत रहे। करीब 5-7 मिनट तक रजत कहीं नजर ना अवले। एगो जिन्स, टी शर्ट पहिनले लड़की पहिलही से खड़ा रहे। तबही स्कूटर पर एगो 21-22 साल के लड़िका आ के खड़ा भइल।

"हाय डार्लिंग!"

– लड़िका बोललस। लड़की फटाक से स्कूटर के पीछे वाला सीट पर बइठ गइल आ एक हाथ से लड़िका के कमर पकड़ लिहलस। स्कूटर चल गइल। हम चारो ओर देखे लगनी। फिर धीरे-धीरे गड़ियाहाट के ओर पैर बढ़वनी। मन में एक किसिम के डर भी होत रहे। एकेगो भरोसा रहे गोलू। थोड़हीं दूर गइल रहे कि सामने रजत दीख गइलन। देखत-देखत हमार सब नाराजगी उड़ गइल।

सामने पड़त-पड़त पहीले गोलू के गोद में उठा लिहलन, आ बगल से एगो रेशमी रूमाल में लपेटल लाल गुलाब हमरा के पकड़वलन।

ई आदमी कतना कायदा जानऽता। हम मने-मने सोचनी। समय के तकाजा बुझ के हम फूल होंठ के पास ले आके इंतजार करे लगनी कब नजर घुमावतारन। कएक सेकेंड लागल। जइसे नजर से नजर मिलल हम फटाक से आपन होठ फूल पर रख दीहनी। आगे-आगे रजत, गोद में गोलू। पीछे-पीछे हम।

"भाभी, चली गोलू बेटा के आइसक्रीम खिआवल जाव।"

हमरा जबाव के जरूरत कहाँ रहे। सामनहीं एगो रेस्टोरेन्ट रहे– संगरिला। हमनी का घुस गइनी स। अंदर घूप अंधेरा रहे। रजत के पीछे-पीछे चल के एगो केबिन में घुसनी स। सामने कुर्सी पर गोलू के बइठा के हमरा के अपना पास वाला कुर्सी पर बइठे के इशारा कइलन। हमरा बइठत भइल कि रजत के हाथ हमरा हाथ के खोज निकललस। चौड़ा हथेली में हमार हाथ लागत रहे सेयान आदमी के गोद में बच्चा। अंगुली से अंगुली खेले लगले सन अपने आप। हम भूल गइनी कि सामने हमरे शरीर से निकलल बच्चा बा। सारा शरीर आ मस्तिष्क पर जुइसे नशा चढ़त जात रहे। एही बीच तीन गो आइसक्रीम रख गइल बेयरा। गोलू का आइसक्रीम बड़ा पसंद रहे। ऊ आइसक्रीम खाए में मस्त रहे। रजत हमार हाथ अपना छोड़ा हाथ में ले लिहले आ धीरे-धीरे सहलावे लगले। उनकर अगुंरिन के नोह

हमरा तरहथी में गड़त रहे। हमरा पर एगो मीठ नशा चढ़े लागल। अचानक उनकर अंगूठा हमरा अगुरिन में फंस गइल। हम धीरे से ओके पकरि लिहलीं। ओकरे असामान्य आकार से हम चौंक गइलीं। बचपन में चीभल ऊख क गेंड़ा इयाद आ गइल। हम ओके मुँह में भरके चूसे लगलीं। धीरे-धीरे ओमे से रस चू के हमरा मुँह में भरे लागल। हम तंद्रा में डूब गइलीं। हमरा पोर-पोर में सैकड़ों मधु के झरना बहे लगलन स। कुछ क्षण हम ई अनुभव अपना अस्तित्व में घटित होत महसूस कइली। एह बीच समय क गति जइसे थम गइल रहे। बाकिर कुछ अंतराल क बाद हम प्रकृतस्थ भइली।

"ना चलल जाव।"

रजत का चेहरा पर उदासी दीखल। उनका आँख में कुछ देर आँख डाल के देखनी।

तूफान गुजर गइल। हम अपना खोल में लवट अइनीं। रजत के साथ लवटे के साहस ना भइल। टैक्सी में बईठ के कहनी–

"ना तू अलग टैक्सी में आवऽ।"

सुबेश आगे ना पढ़ पवलन। डायरी लिफाफा में रख के ब्रीफकेश में बंद करके रखलन। दिमाग जइसे भावशून्य हो गइल रहे। आँख बंद करके के कोशिश करे लगलन खुद के समेटे के। अभी कुछ देर भइल रहे कि नौकर आके कहलस–

"बाबू, नहाइल जाव। खाना तईयार हो गइल बा।"

"जा तानी।"

– कहके सुबेश उठे के कोशिश कइलन। न जाने का मन में आइल। फोन मिलवलन–

"के?"

– माँ के आवाज आइल।

माँ के आवाज से उनका उम्र के अंदाज लगावल मुश्किल रहे।

सुबेश हजरों-लाखों लड़की-औरत से फोन पर बतियवले बाड़न। बाकिर माँ के जइसन मीठ आ सुरीला आवाज उनका कान में नइखे आइल। सुबेश पूछलन–

"माँ कइसन बाड़ू?"

सुबेश।

माँ–

"हमरा का होखे के बा! तू आपन बतावऽ।"

"हम बिल्कुल ठीक बानी।"

"खाना खइले बाड़ कि ना?"

"खाए ही जा तानी।"

"बहु कहाँ बाड़ी?"

"ऑफिस।"

"अच्छा, बाबू पहिले खालऽ। फेर समय मिले त फोन करीह।"

"अच्छा माँ।"

फोन रख के सुबेश फिर सोचे लगलन माँ के बारे में। माँ के अलग-अलग समय के चेहरा सिनेमा के रील के तरह उनका सामने घुमे लागल। माँ में हमेशा अलग तरह के उर्जा महसूस करस सुबेश। खाली एसे ना कि ऊ उनकर माँ रहस।

अबही जब एगो अलग रूप सामने रहे तऽ सुबेश के दिमाग जइसे शून्य भइल जात रहे। डायरी तऽ कवनों कहानी ना रहे। खाली एक तरह के इंगित रहे। ना कि पूरा तरह माँ के फैंटेसी। सुबेश का कुछ समझ में ना आवत रहे। बाबा-माँ एक साथे लंबा जीवन बीतवले रहस। बाबा के मरला के बाद भी माँ उनकर घर छोड़े के तइयार ना भइली। बाबा के छोड़के माँ कोई दूसरा से प्यार करत रहली एपर विश्वास कइल कठिन लागत रहे। खैर, एकबार पूरा डायरी पढ़ ली। तबें कवनों बात बुझाई। सुबेश स्नान घर में ढूक गइलन।

नौ

एतवार के पत्नी घर में रहस। एहसे सुबेश डायरी निकाल ना पवलन। सोमवार के ऑफिस पहुँच के रूटीन काम देखलन। कंप्युटर पर मेल चेक कइलन। जरूरत के मुताबिक डाक विभागन में बाँट के रजत काफी के चुस्की लेबे लगलन। ई समय उनका खातिर बड़ा ही महत्त्वपूर्ण रहे। आज के ऊ सब कामन के बाड़े में विचार करे लगलन जवन उनकर व्यक्तिगत जिम्मेवारी में रहे। कंप्युटर पर एगो डोकोमेंट खोललन। पासवर्ड मंगलस कंप्युटर। सुबेश पासवर्ड में हमेशा अंक व्यवहार करस। कंप्युटर पर आ गइल–इकीसवीं सदी में परिवार और तलाक। एक-एक पंक्ति पर उनकर नजर फिसले लागल। शुरू के पैराग्राफ भूमिका रहे। फेर शादी के आवश्यकता के बारे में रहे। सुबेश का दूसरा पन्ना के तीसरा पैराग्राफ कुछ ठीक ना लागल। कर्सर ऊहाँ ले अइलन आ टाइप करे लगलन–

"ज्यादातर लोग शादी के पूर्णविराम के रूप में सोचेला। युग-युग से अइसन धारणा आदमी का मन में घर कइले बा। शादी के बाद उनका जिदंगी में कवनों संपर्क वाला परिस्थिति पैदा ना हो सके। ज्यादा से ज्यादा क्षणिक उन्माद आदमी के वशीभूत कर सकेला। बाकिर परिवार के प्रति जिम्मेवारी ओ परिस्थिति के ज्यादा देर टिके ना देला। शादी टूटे वाला स्थिति पैदा भइल कठिन हो जाला।

बाकिर अइसन सोच एक खास तरह के विचारधारा पर पैदा भइल बा। वर्तमान समय अइसन विचार के चुनौती दे रहल बा। आज का दिन में विवाहेत्तर संबंध क्षणिक उन्माद तक सीमित नइखे रहत।

एकरा साथ रोमांस, सिद्धांत, पौराणिकता आ सबसे ऊपर गंभीर आशक्ति (Intense emotion) जुड़ गइल बा। विवाहेत्तर संबंध अब कुछेक लोग तक सीमित नइखे रह गइल। कारण चाहे जवन होखे। अधिक से अधिक लोग का जिंदगी में अइसन संबंध कायम हो रहल बा। अलग-अलग आदमी का संदर्भ में विवाहेत्तर संबंध के अलग-अलग मतलब बा। आ ई मतलब के ठीक-ठीक स्वरूप उहे समझ सकेला। बाकिर इ मतलब समझ पावल कवनों साधारण बात नइखे। तरह-तरह के पारिवारिक आ सामाजिक बाधा, सबसे बड़ा रुकावट होला ऊ मतलब समझे में। एकरा अलावा टेम्पटेशन से उत्पन्न उलझन दोसर रुकावट बा। तीसरा रुकावट बा कवनों तरह के जाल में पड़ल।

आदमी का जिंदगी में विवाहेत्तर संबंध बड़ा ही गंभीर विषय बा। एकरा के समस्या कहके एकर गंभीरता छोट हो जाई। तलाक खातिर विवाहेत्तर संबंध एगो वैध कारण हो सकता। बाकिर एकरा खातिर विवाहेत्तर संबंध के परिस्थिति विचार कइल एगो आवश्यक शर्त भइल ज़रूरी बा।”

सुबेश के हाथ रुकल। ऊ फेर से एकही गो शब्द पढलन। अब समय रहे मीटिंग के। विषय बंद कर के कंप्युटर पर आज के व्यस्तता वाला आईकॉन क्लिक कइले। इंटरकॉम पर पूछलन– “के मुलाकाती बा?”

आज चार बजे के बाद कवनो मुलाकात ना रहे। सुबेश आपन ब्रीफकेश खोललन। डायरी के पन्ना पलटे लगलन।

16 फरवरी, 1987

सोमार

अपना दिमाग से सारा कुछ झटक के निकाले के कोशिश करत-

करत कुल 36 घंटा बीतवनी। सुबह घर के काम निपटा के अजितेश के कॉलेज विदा कइनी। फेर गोलू के नहवा के, खाना खिया के सुतावे के कोशिश करे लगनी। तबही फोन के घंटी बाजल। पूरा बाजे के पहीलही हम रिसिवर उठा लिहनी।

"हाय"

–मुँह से निकलल भइल कि ओने से अजितेश के आवाज सुनाइल–

"का भइल–दोसरा केहू-के फोन के इंतजार रहल का?"

"अइसन कहाँ भाग्य बा?"

– हम रोमांटिक आवाज में कहनी।

"खैर बताई का बात बा?"

"ना, आज हो सकता एगो रजिस्ट्री चिट्ठी आवे।"

"घरे में रहे के बा तऽ।"

"हम कहाँ जाइब?"

"ठीक बा रखऽ तानी।"

"बाय।"

"हे भगवान!"

– फोन रखके हमरा मुँह से निकल गइल। अजितेश का कवनो शक नानू भइल होई? ना ना, ऊ शक करे वाला आदमिए नइखन आ हम ओइसन कइलही का बानी? हमरा अजितेश के सरलता आ सच्चाई पर पूरा विश्वास रहे।

इहे सोच-विचार में गोलू कब सुत गइल हमरा बुझइबे ना कइल। ओकरा के सुतल देख के हमरा सुध आइल। हम झटाक से उठ के नहाए के तैयारी करे लगनी। अबही स्नानघर में घुसते रहनी कि फोन में घंटी बाजल। अबकी बार सावधान रहनी। गंभीर आवाज से हलो कहनी। ओने से परिचित आवाज आइल–

"हाय जान। मूड ठीक नइखे का हमरा लव के?"

"ना-ना। सब ठीक बा।"

– हम जइसे संभाले के कोशिश कइनी।

"का होता?"

"नहाये जा तानी।"

"एतना देर से?"

"अइसही होला शादीशुदा औरत के जिंनगी।"

"हमार प्यार का साधारण शादीशुदा औरत से बा?"

"त दोसर का?"

"ऊ त असली हीरा बा जवन अबही तरासल नइखे गइल।"

हमरा मन के खालीपन में जइसे आक्सीजन भर गइल। चेहरा पर मुस्कान आ गइल।

"रजत जइसन जौहरी का हाथ में ही शायद तरासल लिखल बा।"

"ई त नइखे मालूम भाभी कि हमरा तरासे के मौका मिली कि ना बाकिर हम हीरा पहचाने में कवनों गलती नइखे कईले।"

"अच्छा हमार जौहरी। अब थोड़ा मौका दीहल जाव कि तनी नहा-धोवा लीं।"

"अनुमति दी भाभी तऽ हम नहवा दीं आपके।"

"फोन पर!"

"कही तऽ आ जा तानी।"

"खूब होता ना! पिटाये के नइखे नू?"

"हाय भाभी कब पिटबू हमरा के।"

"तहरा के थोड़े ...।"

"अब समझ में आइल भाभी। देखी ना ऊ तऽ आपके पीटाई खातिर तइयार हो गइल।"

"ए बदमाश, कहत तऽ बाड़ भाभी आ बात सब अइसन-वइसन।"

"भाभी कहे में एगो रस बा सुष्मिता।"

"तऽ अबसे सुष्मिता ही कहीहऽ।"

"आई लव यू सुष्मिता, आई लव यू।"

"मी टू रजत"

बात तनकी देर खातिर रुक गइल। हम कहनी–

"तऽ रखीं फोन?"

"ना डालिंग प्लीज।"

"तऽ नहाई ना?"

"आज हम नहवा दे तानी।"

"ओकरा खातिर इंतजार करे के परी अबही।

"कतना, जान।"

"समय बताई, डीयर।"

तबही डोर बेल बजल। हम कहनीं–

"लागता केहू आइल। रखतानी बाय, टेक केयर।"

अजितेश के नामे के रजिस्ट्री ले के डाकिया रहे। ऊ रजिस्ट्री रहे मध्यप्रदेश लेक्चरार नियुक्ति परिषद से। अजितेश के साक्षात्कार 13 मार्च 1987 (शुक्रवार) के भोपाल में रहे। ई चिट्ठी जइसे अलादीन के चिराग जइसन मिलल। समय सोचे के तरीका भी बदल देला। पिछला साल जब अजितेश एकरे लिखित परीक्षा देके लवटल रहस तऽ साफ-साफ कहले रहनीं–

"अजितेश, चाहे रउवा जहाँ कहीं के भी परीक्षा पास हो जाई, हमरा कोलकत्ता छोड़ के नइखे जाएके।"

आज उहे परीक्षा के साक्षात्कार के चिट्ठी देख के हम दोसरे हिसाब लगावे लगनी।

अजितेश के लवटत ना भइल कि हम चिट्ठी देके पूछ भइनी–

"कइसे जाइब भोपाल आ कतना दिन लागी?"

अजितेश अपना स्वाभाविक शांत भाव से जवाब दिहलन–

"काल्ह पता करीले फेयरली प्लेस जाके। ना जाने सीधा ट्रेन बा कि ना।"

"साक्षात्कार के एक दिन पहीले पहुँचे के चाहीं।"

हम अपना उत्साह के दबावत-दबावत कहनी।

"हाँ, बाकिर काल्हे सब खबर मिली।"

"ऊ रजत तऽ बाहर जात वात रहेले। उनका से पूछीं ना।"

अजितेश फोन करे लगलन। संगे-संगे हमरा ओर ताक के कहलन–

"बाकिर हम अकेले जात बानी।"

सोचलीं–

"अच्छे बा। ई अब तक समझत बाड़न हमहूँ भोपाल जाये खातिर धंधा करत बानी।"

थोड़ा नखरा वाला सुर में कहनी–

"ठीके त बा। साक्षात्कार कवनों हमरा देबे के बा कि हम जाएब।"

अजितेश कुछ कहे जात रहस तब तक शायद लाईन पर रजत मिल गइल रहस। ऊ अपना आवे-जाये के बारे में बतीयावे लगलन।

बाद में ठीक भइल अजितेश 11 मार्च के रवाना होइहें आ ओने से 14 मार्च के वापस अइहें।

ओह दिन से हमरा खातिर 11 मार्च जइसे एगो विशेष तारीख हो गइल। जब फुर्सत मिले खाली 11 से 14 मार्च बुधवार, बियफे, शुक, शनिचर–चार दिन के बारे में ही सोंची।

इंतजार के समय बड़ा लमहर हो जाला। बाईस गो दिन निकालल हमरा खातिर जइसे बरिसन बीतल। हाँ, एगो बात जरूर रहे। घर के

सब काम में हमरा एक तरह के सुकून मिले लागल। हालाँकि सब काम पहीलही का तरह रहे बाकिर ओ सब में मन लागे लागल। हमरा स्वभाव में ई परिवर्तन अजितेश महसूस कइले कि ना कुछ ना बुझाइल। बाकिर हम खुद ए बात के पूरा तरह से महसूस करीं। अजितेश खाना खा के टी.वी. देखे लागस। हम आदतन सुत जाईं। जब ऊ बिछावन पर आवस त हमरा होश ना रहे। बाकिर एह दरम्यान उनके बिछावन पर आवत ना होखे कि हमार नींद खुल जाव। ऊ जइसे लेटस हम करवट बदल के उनका पर बाँह रख दी। एकाध दिन अजितेश हमरा पहल के जवाब देस। बाकिर ज्यादा समय धीरे से हमार हाथ हटा देस। अइसन लागे जइसे उनका अइला से हमरा अंघी में खलल पड़ गइल होखे आ एकर जिम्मेवार ऊ बाड़न। उनकर व्यवहार कबो-कबो बाप जइसन लागे। हमार मन छटपट करत रह जाव।

एह बीच करीब-करीब रोजे रजत से दुपहर में बात होखे। खाली छुट्टी के दिन जहिया अजितेश घर में रहस ओह दिन बात ना होखे। एक दिन गलती से दरवाजा खुलल रह गइल रहे। हमनी फोन पर बतियावत रहनी सन। बातचीत के क्रम फैंटेसी वाला स्तर पर पहुँच गइल रहे। हमार मन आ शरीर पूरा तरह उत्तेजित हो गइल रहे। हठात एगो हाथ महसूस भइल। नजर फिरवनी त अजितेश रहलन। हमरा तऽ पैर के नीचे से जमीन खिसक गइल। जइसे-तइसे कह पवनी–

"अजितेश आ गइल बाड़न। लीं उनके से बतीया लीं।"

अजितेश पूछलन–

"के ह?"

हम फोने पर मुँह रख के कहनी–

"रजत जी। पूछत रलेहन 11 तारीख के स्टेशन कइसे जाइब?"

फोन अजितेश के पकड़ा के हम हट गइनी। किचेन के ओर जाये के पहीले बेसिन के पानी खोल के मुँह धोवनी। फेर मुँह पोछत-पोछत किचेन में चाय बनावे लगनी।

अजितेश के आवाज आइल–

"का होता, आवऽ एने।"

"चाय लेके आवतानी।"

हम बोलनी।

चाय बनावे में जतना समय लागल ओह में हमार सामान्य अवस्था लवट आइल।

अजितेश चाय के चुस्की लेत-लेत कहले–

"सुष्मिता, हम सोच तानी की चार दिन के त बात बा। तू अकेले मैनेज ना कर सकबू का?"

"एहीसे तऽ कहत रहनी ह जे हमहूँ साथे में चलती। घुमलो हो जाइत।"

"देख, एक दिन के तऽ काम बा। ठीक से घुमलो ना होई। आ फिर रुपया-पैसा के भी त सोचे का बा।"

"रहे दी आपन सोचल। हम अकेले रह लेब।"

"पहिला बार बा तऽ। हमरो ठीक नइखे लागत।"

– अजितेश के मूड देख के हम चेहरा पर मुस्कुराहट ला के कहनी–

"सुष्मिता अतना कमजोर भी नइखी कि उनकर कोई कुछ बिगाड़ ली। आप मन खराब मत करीं। साक्षात्कार के तनी तैयारी कर लीं।"

"थैंक यू माई डीयर। थैंक यू!"

माथा हिला-हिला के अजितेश जइसे कृतज्ञता जाहिर करे लगलन।

आखिर 11 मार्च आ गइल सुबह से ही हमरा मन आ शरीर में

बसंत के हवा लागे लागल। घर के काम सब पुराने रहे बाकिर ओ सब के निपटावे में हमरा आज सुस्ती ना लागत रहे। बीच-बीच में अजितेश के भी सफर में कइसे सावधान रहे के चाही समझा आई। करीब 12 बजे उनका के कहनी कि नहा-खा के तैयार हो जाईं। 3 बजे ट्रेन रहे। डेढ़ बजे के करीब रजत आ गइले।

अजितेश कहले–

"रजत एकबार चाय पी लेहल जाव।"

"ठीक बा भइया।"

हम कीचेन में चाय बनावे चल गइनी। दूनो जाना ट्रेन आ भोपाल के बारे में बतियावें लागल लोग। सुनल जाला जे दूगो औरत चुपचाप ना बईठ सके। बाकिर हमार अनुभव त उल्टा बा। दू गो मरद जब बतियावे लागेला त स्थान, पात्र या विषय के कवनों खयाल ना रहेला। हम चाय ले के अइनी। रजत से आँख टकराईल। हम नजर के भाषा से ही सावधान रहे के संकेत दीहनी।

दू बजे के करीब दूनो जाना निकल गइल लोग। गोलू रोवे लागल। ओकरा के मनावे खातिर हमरा खासा मेहनत करे के पड़ल। आखिर रोवत-रोवत गोलू सूत गइल। फेर हमरा अंदर के सुष्मिता जागे लागल। देखनी पौने तीन बज गइल। हम झट से उठनी। आँख मुँह में पानी डलनी। केश में कंघी कइनी। हमार केश बड़ा-बड़ा रहे। सर के बीचोबीच बड़ा वाला क्लीप लगा के पीछे खुलल छोड़ दीहनी। ड्रेसिंग टेबुल के सामने बइठनी। चेहरा पर हल्का फेस क्रीम लगवला के बाद आँखन पर हल्का आई ब्रो घुमा लीहनी।

लिपिस्टिक के रंग चुने में थोड़ा देर भइल अंत में ठीक कइनी-ना लिपिस्टिक लगावल ठीक ना होई। खाली मॉइसचराइजर लगवनी। आयना में निहरला पर बहुते परिवर्तन दीखल। असल में अंदर के भावना मेकअप से ज्यादा खूबसूरती आवेला।

फेर ड्रेस के बारे में सोचें लगनी। मने मन ठीक कईनी– ना सबसे बढ़िया होई कंप्लीट केयरलेस साड़ी हमरा कभी पसंद ना आवेला। संभाले में ही टाईम निकल जाला। अबही से नाइटी पहिनल भी ठीक ना होई। अंत में एगो पुरान सलवार कमीज निकलनी। थोड़ा छोट भगईल रहे जवना से हमार छोटाई ढंक जात रहे। पहिने में थोड़ा असुविधा भइल बाकिर पहीनला पर हमार मन में पांख लाग गइल। ओढ़नी सोफा पर रख के घरे में चल फिर के खुद के अलग-अलग कोण से आयना में देखे लगनी। पीछे वाला हिस्सा कुछ ज्यादा ही ऊँचा दीखत रहे। मन में कुछ नया आइल। हील वाला सैंडल ले अइनी। ओमें पैर डाला के कईएक कदम चले के अभ्यास कइनी। फिर मुड़ के आयना में देखनी अंदर से आवाज आइल–

"आज कत्ल होखही के पड़ी।"

घड़ी पर नजर पड़ल। अरे बाप रे। चार बज गइल। रजत के लौटे के समय हो गइल। हम जल्दी से सैंडल उतार दीहनी। टी.वी. चला के सोफा पर बइठ गइनी। मन के अंदर में तूफान के दबावे के कोशिश करे लगनी। देखत त टी.वी. रहनी बाकिर कान बाहर रहे। तबही डोर बेल बाजल। हम झटाक से उठनी। दरवाजा के पास पहुँचला पर ध्यान आइल। फेर लवट के ओढ़ना काँध पर डलनी। दिल के धड़कन बढ़ गइल। दरवाजा खोलनी हम। एके पल में जइसे हवाई जहाज के क्रैश लेन्डिंग हो गइल। सामने सीमा रहे।

"आव सीमा।"

"का कर तानी भाभी।"

– ऊ कहलस।

"कुछ ना। अबगे गोलू सुतल ह। अजितेश जी के जाये का समय बड़ा ही तंग कइलस ह।"

"कब लवटब भईया जी।"

"शनिवार के।"

बात बढ़ावे के क्रम में पूछनी–

"रजत जी अबही लवटनी ह कि ना?"

"ना अबही कहाँ! कह गइले ह चार बजे तक आ जाइब।"

"हाँ, तीन बजे के ट्रेन रहल। अब तक तऽ आ जाये के चाही।"

तबही स्कूटर के आवाज़ आइल।

सीमा भाग के दरवाजा से निकल के सामने चल गइली। हमार मन बुझ गइल। का-का सोच लेहनी हऽ एतने देर में। बैशाख के बदरी जइसन सब विचार पल भर में बिखर गइल। धीरे-धीरे चल के सीमा के पीछे खड़ा हो गइनी। खुद के लाचारी पर क्रोध आइल-दू नंबर भइल सोच के। रजत के ओर निहारे लगनी। नजर टकराईल। हमार दुःख आ उनकर मजबूरी दूनों आदमी के आँख के व्यक्त भइल। रजत के आवाज आइल–

"ट्रेन समय से छूट गइल हऽ, भाभी। भैया आराम से सवार हो गइनी हऽ।"

"थैंक यू, रजत जी।"

– हम चेहरा पर मुस्कुराहट लावे के कोशिश कइनी।

रजत जबाव दीहलन–

"थैंक यू अइसे दीहब त थैंक यू के स्टौक खतम हो जाई भाभी।"

"इ खतम होखे वाला स्टौक ना ह।"

– हम जबाव छोड़ दीहनी।

"अच्छा भाभी, कवनो काम होखे त बता देब।"

सीमा का पीछे-पीछे सीढ़ी चढ़त रजत सर घुमा के कहलन। हम ध्यान दीहनी सीमा के नजर सामने बा। रजत घेंट घुमा के ओठ आ जीभ से कुछ इशारा कईले। हम जबाब ना दे पवनी। बाकिर हमरा अंदर रजत के हासिल करे खातिर तीव्र भावना भर गइल। देखऽ

तानी, सीमा कब तक रोक पावतारी? गोलू जाग गइल। ओकरा में अझुरा गइनी। रात में खाना बनावे के ना रहे। खाली गोलू के दूध गरम करे के रहे। कर लेब, कर लेब कर के 9 बज गइल।

रात भर नींद ना आइल। करवट बदल-बदल के भोर हो गइल। दिन उठ गइल रहे। ध्यानस्त होखे में समय लागत। खिड़की पर नजर गइल। देखनी रजत हाफ पैंट आ टी शर्ट में तेजी से आवत रहस। जइसे हमरा से नजर मिलल ऊ थमक के खड़ा हो गइलन। हाथ हिलावे लगलन। हमार हाथ भी अपने आप हवा में उठ गइल। हाफ पैंट के नीचे पैर काला बाल से भरल रहे। टी शर्ट में छाती आऊर चौड़ा लागत रहे।

बिना बनावल दाढ़ी। सब मिला के हम रोक ना सकनी। बुदबुदाये लगनी (TDH–Tall Dark Handsome) ध्यान दीहनी त समझ में आ गइल ऊपर तला पर सीमा भी खड़ा रहस आ रजत हाथ ऊपर उठा के हिलावे लगलन। आँख बंद कर के सोचे लगनी।

12 मार्च 1987

मुड खराब रहे।

जइसे-तइसे खाना बनवनी।

गोलू के नहवा के खियावत रहनी। तबही फोन के घंटी बाजल। दीवाल घड़ी पर नजर गइल 11.30 बजल रहे। सोचनी अजितेश के फोन होई। उठवनी–

"हाय लव।"

एक बारगी सारा शरीर काँप गइल। हम हजारों लोग से फोन पर बात कइले होखब बाकिर रजत के आवाज हमरा खातिर Anesthetia (बेहोशी सुँघावे वाला रसायन) जइसन काम करे। हमरा मूँह से कवनो आवाज ना निकलल।

"का भइल जान, हमरा से नाराजगी बा का?"

हम खँखार के गला साफ कईनी। बोलनी–

"हमरा नाराज होख के का हक बा?"

"एही से तऽ बुझाता हमरा प्यार में कमी रह गइल बा।"

"शादी-शुदा जिंदगी में प्यार के मतलब बेमाना होला।"

"बाकिर डीयर, प्यार में तऽ कहल जाला उम्र, जात, अवस्था कुछ ना दीखेला।"

"ऊ सब किताबी बात ह रजत। वास्तव में अंसभव बा।"

"प्यार का होला हमरा नइखे मालूम। बस एतने बुझाता कि हम सुष्मिता के बिना ना जी सकब।"

"बाकिर हमरा तऽ अइसन नइखे लागत।"

"झूठ सुष्मिता, झूठ। सुष्मिता, यू लव मी।"

रजत के आवाज उत्तेजित हो गइल।

हम बात संभाले के कोशिश कइनी–

"हाँ रजत। हमार भी त मन बेचैन बा। बाकिर का कइल जा सकेला?"

"सुष्मिता हम कब से एह चार दिन के इंतजार करत रनीहऽ। जवना से एक दिन अइसही चल गइल।"

"त बताव ना का कइल जाव?"

"काल्ह शाम में तहरा के देख के हमार रात भर पागल वाला हालत रहे। आ ऊ सीमा के बच्ची नाक बजा के सुतल रहे।"

"त चल अइतऽ हम त जगले रहनी।"

"सच में सुष्मिता! हम रात में आ सकीला?"

"यू आर माई लव रजत अल्वेज वेलकम।"

"अच्छा अबही का करतारू?"

"आवे के मन बा का?"

"यदि जान के कवनो असुविधा ना होखेतऽ"

"त अभी आ जा।"

"ठीक बा।"

फोन के लाईन कट गइल।

हम सोचनी रजत अइसही कह देते होइहे। देखनी गोलू सुत गइल बा। ओकरा देह पर चादर डाल के हम नहाए के तैयारी में लाग गइनी। धोवे वाला कपड़ा एकट्ठा करके बाथरूम में ढूकब कि दरवाजा पर दस्तक भइल।

"के?"

– आवाज देत-देत दरवाजा के छिटकिनी खोलनी।

"वाऊ।"

उनका अंदर आवे के जगह बनाके दरवाजा बंद करे लगनीं।

मुँह फिरवनी कि रजत एकबारगी हमरा के अपना बाँह में जकड़ लीहले। उनका मजबूत बाँह में हमार शरीर जइसे चिपक गइल। कइएक सेकेंड हमार कवनों ज्ञान न रहे। तबहीं एक हाथ से हमार ठुड्डी पकड़ के हमार मुँह अपना मुँह के पास ले आके रजत होंठ पर होंठ रख दीहलन। उनकर होंठ हमरा होठ के दरकचे लागल। हमार मुँह अपने आप खुल गइल। उनकर जीभी हमरा मुँह में घुस गइल। कब हमार जीभ उनके जीभ से खेले लागल ना बुझाइल।

रजत हमरा के गोद में उठा लीहलन। ओही हालत में ड्राइंगरूम से सोफा पर रख दीहलन। तनी राहत मिलल। सोफा पर लगे-लगे बइठ के फेर हमरा के आलिंगन में भर लीहलन। ए बेर एक हाथ से हमार सर पकड़ के सारा मुँह पर चुम्मा के बरसात कइले जात रहस। दोसर हाथ हमरा छाती पर घुमावे लगलन। हमरा पर एगो नामालूम बुखार चढ़े लागल। हम आ रजत अपरिचत त ना रहनी बाकिर अबहियों अपरिचय के कुछ क्षेत्र रहलन स। अपरिचय के ऊ क्षेत्र

तेजी से अचानक आइल बाढ़ में डूबे लगलन स। लागल कि ई बाढ़ सउँसे अस्तित्व के बोर दिही बाकिर तबे बोध क एगो लहर ओकरा समानांतर चेतना के जाग्रत कई दिहलस हमनी आ संयत हो गइनीं।

मम्मी-मम्मी के आवाज सुन के होश फिर आइल। एक झटका से अपना के मुक्त कइनी। बेडरूम के ओर बढ़नी। ओने से गोलू आँख मलत-मलत आवत रहे। ओकरा के गोद में उठा लीहनी। पहीले जाके दरवाजा खोलनी। बाहर देखनी केहू ना रहे। एह समय में कॉलनी एकदम सुनसान हो जाला।

ड्राईगरूम में अइनी। रजत के हाथ में अखबार रहे। काफी समय मिलल रहे उनका संयत होखे खातिर। हम मुस्कुरा दीहनी।

"चाय ले आवतानी, रजत जी बइठीं।"

"ना हम पीछे आएब।"

– कहके ऊ उठ गइले।

हम पीछे-पीछे दरवाजा तक अइनी। गोदी में गोलू।

"थैंक्यू रजत।"

"यू आर वेलकम।"

दरवाजा बंद कर के भीतर अइनी। गोलू के बइठवनी। टी.वी. चला दीहनी।

सोफा पर लेट के आँख मुँद के पिछला आधा घंटा फेर से महसूस करे के कोशिश करे लगनी। न जाने कब अंघी आ गइल। गोलू के मम्मी-मम्मी के आवाज से अंघी टूटल त तीन बज गइल रहे।

साँझ बड़ी खाली-खाली लागत रहे। गोलू के लेके सामने पार्क में बइठनी। सीमा भी आके पास में बइठ गइली। एने-वोने के बात भइल। कहे लगनी–

"देख ना, उनका ना रहला पर लागत घर में कवनो कामे नइखे।"

सीमा–

"भैया त परसो आयब नूँ?"

"हाँ, बाकिर लागता कतना दिन से अकेले बानी।"

– सीमा मुस्कुरा पड़ली।

"बाह भाभी, बस दू दिन में ही।"

"ना हो, बस अइसहीं।"

"अच्छा भाभी, भइया के साथ का रोज-रोज?"

– सीमा कान के पास फुसफुसाइल।

"रोज-रोज संभव बा का? तू आपन बताव ना। रजत त बड़ा तेज दीखेलन।"

"रोज-रोज! अरे, उनकर चले त हर समय! बाप रे बाप, हम त अगुता गइल बानी।"

"अच्छा! दिनों में?"

"अरे हाँ भाभी। आजुए एक तऽ खाये देर से आइल रहलन हऽ। आ देखलन कि मम्मीजी (सास) सुतल बाड़ी। बस शुरू।"

दिमाग में दुपहर वाला सीन एक बार फेर घुमे लागल। हम खुद के सीमा के जगह पर महसूस करे लगनी।

रात के करीब आठ बजे हम गोलू के खियावत रहनी। गोलू के खियावल हमरा खातिर सबसे बड़ा कसरत रहे। तबही दरवाजा के घंटी बजल। रजत आ सीमा रहे लोग। रजत जिन्स पर एगो कुर्त्ता डलले रहस। हमरा कहे के जरूरत ना पड़ल। ढुकते रजत हाथ जोड़लन।

"नमस्ते भाभी।"

अकचका के उनके मुँह देखे लगनी। चेहरा पर कवनो बनावटीपन ना रहे। बिल्कुल सामान्य। हमरा बाध्य होके कहे के पड़ल–

"नमस्ते!"

सोफा पर बइठ के रजत ही कहलन–

"सीमा कहली हऽ भाभी अकेले बाड़ी, चली एक बार मिल

आवल जाव।"

हम सीमा की ओर देखनी। ऊ अकचका के बात बदलली।

"खाना-ओना बन गइल का भाभी?"

"अकेले में का बनावे के बा। बस अइसहीं।"

"लागता भैया खूब याद आवतानी!"

सीमा आगे कुछ कहस एकरा पहीलही रजत बात कटलन– "अरे कहीं त हम एहीजा सुत जा तानी।"

"ना। ओकर जरूरत ना पड़ी। हमरा के इतना भी कमजोर मत समझब। बस थोड़ा मन उदास हो गइल बा। अच्छा, बइठी सभे हम चाय बनावत बानी।"

– कह के हम उठे लगनी। फेर दूनों जाना उठ गइले–

"अजितेश भैया के अइला पर फिर चाय पीयल जाई।"

हम गेट तक छोड़े अइनी।

"अच्छा, दरवाजा ठीक से बंद कर लेब।"

– रजत मुड़ के सलाह दीहलन। संगे-संगे चेहरा पर उहे शरारत आ गइल रहे। लौट के देखी तऽ सोफा का नीचे एगो कागज के टुकड़ा पड़ल रहे। उठा के देखनी त लिखल रहे– Keep the door open please. (कृपया दरवाजा खुला रखिएगा)

13 मार्च 1987

शुक

अंग्रेजी कैलेंडर में दिन रात में बदलेला। रात बारह बजे तारीख बदल जाला। एक हिसाब से तारीख बदल गइल रहे–आ हमरा जीवन के हिसाब भी। अबहीं तक हम अपना मन के समुझावत रहनी कि रजत के साथ हमार संबंध रोमांस से भरपूर एक तरह के जोखिम बा। अबही ले जेतना तरह के संबंध उनका साथ असाधारण उत्तेजक,

संकटपूर्ण घटना संभव भइल रहे ओकरा के पाप के संज्ञा हमार मन ना देत रहे। स्त्री-पुरुष के लैंगिक मिलन के बिना शायद पापबोध ना भइल एक तरह के संस्कार बा। या त कहीं-ना-कहीं ई समझ निहित बा कि लैंगिक मिलन ही नारी-पुरुष के बीच असली संबंध होला। एकरा अलावा मर्द औरत के बीच चाहे जतना भी घनिष्ठ संपर्क काहे ना होखे कवनो पाप बोध ना उपजे।

हम दरवाजा बंद करके बिछावन पर ओढ़ग गइनी। पिछला कईएक महीना के घटना एक-एक करके हमरा मस्तिष्क के पर्दा पर उभरे लागल। पिछला दिन महीना के हरेक तारीख आ दिन हमरा स्पष्ट याद आवे लागल। गोलू का जन्मदिन पर रजत के प्रति आकर्षण के शुरुआत भइल। फेर डायमंड हारबर में पिकनिक। फोन पर घंटन बातचीत के सिलसिला जवन नशा में बदल गइल। फेर स्लोमोशन रिप्ले जइसन पिछला दू दिन के एक-एक पल घुमे लागल।

काल्ह दूपहर के घटना हमरा शरीर में तपिस भरे लागल। गोलू के ओर ध्यान गइल। सूत गइल रहे। हम उठनी। दबे पाँव ड्राईंग रूम में गइनी। लाइट जरवनी। देखनी 12.30 बजल बा। पानी पीयनी। का मन में आइल। धीरे से दरवाजा खोलनी सामने घूप अंधेरा के सिवा कुछ नजर ना आइल। दरवाजा धीरे से भिड़ा के ड्राइंग रूम में आ गइनी। ड्राइंगरूम में दीवान बिछल रहे। का मन में आइल ओही पर औढ़ंग गइनी। आँख बंद करत भइल कि फेर उहे सब सीन के पुनरावृत्ति होखे लागल। अंघी जइसे आज बैरन भऽ गइल रहे। एकबार फेर से खड़ा भइनी। खिड़की चेक कइनी। सब बंद रहे। पर्दा भी जगह पर रहे। एहतियात के तौर पर ट्यूब लाईट बुझा के नाईट लैम्प जला दीहनी। बार-बार करवट बदलत रहीं। जइसे नींद आवे बुझाव रजत पास में खड़ा बाड़न। आँख खुल जाव। सिल्क के नाईटी पहिनले रही। बड़ा असुविधा लागे लागल। ब्रा खोल के सोफा पर

फेंक दीहनी। धीरे-धीरे हाथ फेरे लगनी। न जाने कब मन थक गइल आ हमरा नींद आ गइल।

होंठ पर एगो विचित्र अहसास महसूस भइल। बाकिर आँख ना खुलल। जइसे उहे होठ के स्पर्श के प्रतीक्षा रहे। आँख खोल के हम सपना तूरे के ना चहनी। धीरे-धीरे ओ ओठ नीचे की ओर बढ़े लागल, गाल, कान, आँख फिर गला। हमार दूनो पैर, अपने-आप जगह बना देहलस। आह! हमरा मुँह के आवाज निकलल। कान में मंत्र जइसन आवाज आइल–

"सुतल रह जान। अब मत रोक।"

रोके के चाहते के रहे। हमार अंदर त ओके महसूस करे खातिर बेचैन भइल जात रहे।

इंतजार करे के ना पड़ल। हठात महसूस भइल कि शायद सपना टूट गइल। धीरे से अँख खोलनी। नाईट लैंप के प्रकाश रात में बड़ा ही तेज प्रकाश देत रहे। सामने रजत खड़ा होके आपन शर्ट उतारत रहस। हम कुछ कहीं कि उनकर शरीर हमरा से सट गइल। हमार दुबरा पातल देह पूरा तरह रजत का मजबूत शरीर के काबू में आ गइल रहे। धीरे-धीर हमार आवाज गर तक रुक गइल। देह के सब अंग के खून में गति एक ही जगह पर केंद्रित हो गइल। हम दूनो हाथ से उनके जोर से पकड़ के अपना ओर खींचे लगनी। तूफान के प्रवाह महसूस भइल। तनी देर ले ऊ ओइसही सुस्त पड़ल रहले। हमरा शरीर के इशारा पाके ऊ पास में ओढंग गइले। बाकिर पास से हमरा शरीर के आलिंगनबद्ध कइले रहस। पंद्रह-बीस मिनट ओह अवस्था में पड़ला के बाद हमरा शरीर में फिर सुगबुगाहट होखे लागल। हड़बड़ा के उठ बइठनी। दिन के प्रकाश फइल गइल रहे। जल्दी से उठ के नाइटी देह पर डलनी। दउड़ के बेडरूम में गइनी। ना गोलू अभी सूतल रहे। घड़ी पर नजर गइल 7 बजल रहे। साँस-में-साँस आइल।

बेसिन में मुँह धोवे लगनी। आयना में देखनी। कंघी से बिखरल बाल ठीक कइनी। पियास लागल रहे। फ्रिज से पानी निकाल के गटगट पी गइनी। सोफा पर बइठे जात रहनी कि मन बदल गइल। बेडरूम के बिछावन पर लेट गइनी। अपने आप हाथ गोलू के सर पर चल गइल। ओकरा केश में अंगूरी फेरावे लगनी। गोलू के सुगबुगाहट महससू भइल। हम कोरा में लेके ओकरा गाल पर चुमा लेहनी। ऊ आँख खोललस। हम ओके गोद में चिपका लिहनी।

डायरी बंद करके सुबेश लिफाफा में डाल लेलन। उनकर आँख अपने आप बंद हो गइल। लागत रहे शाइत दुनिया में ऊ पहिला बेटा बाड़न जेकरा माँ-बाप के अइसन थाती मिलल बा। माँ-बाप कबो ई न सोचले होई लोग कि वोलोग के गाड़ल मुर्दा अइसे जी उठी आ ऊहो अपना संतान के सामने।

आदमी के चरित्र बनावे में ओकर पेशा के काफी योगदान होला। सुबेश के काम उनका अंदर के संवेदना के खत्म कर देले रहे। सब चीज के सब्जेक्टिव देखल उनकर पेशागत जरूरत रहे।

इयाद ना आवे ऊ कब खुल के हँसले रहस। माप के बोलल आ माप के चलल सुबेश खातिर काम के जरूरत से आदत में बदल गइल रहे। दुनिया आ दुनियादारी के जानकारी उनका किताब तक ही सीमित रहे। माई के डायरी उनका के पूरा तरह झकझोर दीहलस। डी. एच. लारेंस के 'लेडी चैटलीर्ज लवर' ऊ बचपन में पढ़ले रहस। कॉलेज के समय सिनेमा आइल रहे टाइटानिक। बड़ा ही हिट भइल रहे। किशोरवय में सुबेश का बड़ा ही अच्छा लागल रहे। बाकिर वयस्क भइला के बाद ऊ सोचले इ सब पूरा तरह काल्पनिक कहानी ह। हो सकता पश्चिमी देशन में यदाकदा मिलल-जुलत घटना घटलो होखे। बाकिर भारत में ना-ना। बाकिर अबही लागत बा सच्चाई

कल्पना से भी विचित्र होला। सुबेश के मस्तिष्क काम कइल बंद कर दीहलस। घड़ी पर नजर गइल। 7.15 वापस आवे के कोशिश करे लगलें। सुबेश चपरासी के ऊ समय से चल जाये के अनुमति दीहले रहस। उनका मन में चपरासी का प्रति भक्ति जइसन भाव रहे। केंद्रीय सचिवालय के ज्यादातर चपरासी शाम के शराब सेवन करीए के घरे जालन। साहेब जितना बड़ा, चपरासी के रुतबा भी ओतना ही बड़ा। बाकिर सुबेश के चपरासी एह सब से दूर रहस। ऊ रात में मुहल्ला के तीन-चार गो लड़िकन के ट्यूशन देस। जवना से कुछ पइसा भी मिले आ उनके मानसिक शांति भी। भगवान भी दयावान रहस। बेटा डाक्टरी पढ़त रहे। ई सब पता लगला के बाद सुबेश के मन उनका प्रति श्रद्धाभाव से भर गइल रहे।

ऊ ब्रीफकेश ठीक कइले। बाहर निकलके दरवाजा खींच दीहले। दरवाजा अपने आप लॉक हो गइल। सुनसान कॉरीडोर कुछ ज्यादे ही लमहर लागत रहे। सीढ़ी से उतर के गाड़ी पार्किंग के ओर बढ़े लगले। तब ले ड्राइवर के नजर उनका पर पड़ल। झटक के उनका हाथ से ब्रीफकेश ले लीहलस। गाड़ी के दरवाजा खोल के खड़ा भइल। सुबेश के बइठ गइला के बाद उनका पास ब्रीफकेश रख के दरवाजा बंद क दीहलस।

काल्ह रात भर सुबेश के मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार आवत-जात रहल। नींद भी बढ़िया से ना आइल। उनकर पालन-पोषण बड़ा ही बंद परिवेश में भइल रहे। बाहर के दुनिया के बारे में उनकर जानकारी कर्मक्षेत्र द्वारा ही भइल रहे। माने जवना के कहल जाला थर्ड परसन नॉलेज (third person knowledge).

स्कूल-कॉलेज का दिन में भी उनका नजदीकी केहू से ना रहे। हर जगह एगो कंपटीशन रहे। जवना उम्र में विपरीत सेक्स के प्रति रूझान होला ओह समय उनका पर माँ के भयंकर निर्देश हावी रहे।

अइसन ना रहे कि ऊ कवनो लड़की के संपर्क में ना आइल रहस। आई.आई.टी. के फाईनल ईयर के बात हऽ। उनकर प्रोफेसर रहस डॉ. प्रकाश पांडेय। सुबेश के उनकर स्टाईल बड़ा ही अच्छा लागे। केयरफूली केयरलेस (Carefully careless) कहल जाला जवना के। कुछ नजदीकी भइला के बाद सुबेश उनका घरे आवे-जावे लागल रहस। डॉ. पांडेय के पत्नी के उम्र इहे करीब 30 साल होई। प्रोफेसर साहेब परिचय करवले–

"किरण, ई सुबेश बाड़े। अपना बैच के सबसे होनहार बच्चा।"

सुबेश पैर छुवे खातिर झुकलस। तबही दू गो मुलायम हाथ अपना बाँह पर महसूस कइलन।

"ना-ना, पैर छुवे के जरूरत नइखे।"

– उनकर मृदु आवाज सुनके सुबेश खड़ा होके उनका चेहरा के तरफ निहारे लगलन। सुबेश के नजर उनके नजर पर जइसे अटक गइल। उहे बोललीं–

"बइठ। हम चाय लावत बानी।"

"ना मैडम, हम चाय ना पीहिला।"

"ठीक बा तऽ कोल्ड ड्रिंक लऽ।"

"ना, उहो ना। प्लीज आप कवनो कष्ट मत करीं।"

प्रोफेसर साहेब रक्षा कइलन।

"रहे दऽ किरण। पीछे देखल जाई।"

फिर सुबेश की ओर मुखातिब भइलन। गुरु-शिष्य के बीच वार्तालाप कुछ ही पल में गंभीर हो गइल। सच में गुरु के बड़ा भाग्य से शिष्य मिलेला।

फेर त सुबेश के प्रोफेसर साहेब किहाँ आइल-गइल बढ़ गइल। हालाँकि प्रोफेसर साहेब के ही पहल होखे। उनका एक तरह के नशा जइसन रहे। सुबेश के ज्यादा से ज्यादा पढ़ावे के। सच कहल जाव

तऽ सुबेश के आई.ए.एस. बने के पीछे प्रोफेसर पांडेय के ज्यादा योगदान रहे।

ओह दिन होस्टल में सुबेश के रूम मेट ना रहे। सुबेश के सबेरही से मन अच्छा ना लागत रहे। डॉ. पांडेय भी बाहर गइल रहस। तरह-तरह के विचार आवत-जात रहे सुबेश का दिमाग में। मन करे एक बार प्रोफेसर साहेब किहाँ जाये के। मैडम के देखे के बड़ा इच्छा होत रहे। तबही बरखा शुरू हो गइली। बरखा एहुंगा आदमी में रोमांस ला देला। सुबेश के तऽ उम्रे रहे।

बरखा थमल। सुबेश निकल गइलन। डोर बेल के स्वीच पर अंगूरी रखलन। दबावे के पहीले थोड़ा घबराहट भइल। अंदर से आवाज सुनाइल–

"के हऽ।"

"सुबेश, मैडम।"

दरवाजा खोल के ऊ सामने अइलीं। शैंपू कइल बाल ककही पर पड़ल रहे। ढीला नाईट सूट रहे नीचे। उनकर ऊँचाई कम रहे। सुबेश अंदाज कइले 4 फूट 8 इंच। ई ड्रेस में ऊ ओरियेन्टल लड़की जइसन लागत रहस। उम्र त 21-22 से ज्यादा ना लगात रहे। सुबेश को होंठ सुखे लागल।

"कम ईन।"

सुबेश धीरे-धीरे अंदर भइलन। तबही बरखा फेर से शुरू हो गइल। कहल जाला भगवान खुश होलन त बरखा बरसावेलन। उनके पीछे-पीछे सुबोध बालक के तरह सुबेश ड्राईंगरूम में गइलन। एगो सोफा की ओर इशारा कर के ऊ पास वाला सोफा पर बइठली। दूनो सोफा के बीच एगो छोट टेबुल रहे साईड टेबूल। जवना पर दू गो गिलास रहे। एगो बर्फ के बर्तन रहे बाल झटक के किरण मैडम कहली–

"लाइक टू हैव सम ड्रिंक्स?"

सुबेश एकटक देखत रह गइलन। आवाज ना निकलल। ऊ उठलीं। सुबेश का सामने से चल के फ्रिज के पास गइली। एगो बोतल ले के अइलीं। बइठ के बोतल खोललीं। दूनो गिलास में थोड़ा-थोड़ा डाल के बोतल के ढक्कन बंद करके रख दीहली। बर्फ के बर्तन से कॉर्क से पकड़ के बर्फ के टुकड़ा दूनो गिलास में डाल के पूछली– "वाटर भा सोडा?"

सुबेश होस्टल के फंक्शन बगैरह में दू एक बेर बीयर पीयले रहस। हलाँकि उनका कबो नीमन ना लागे। ह्विस्की कबो ना पीयले रहस। उनकर सोच बाकी लोग जइसन रहे बीयर शराब ना होला। बाकिर आज उनका पास कवनो विकल्प ना रहे। बड़ी कष्ट से बोल पवलन–

– "सोडा"

किरण मैडम फेर उठलीं। फ्रिज से एगो बोतल ले अइलीं साथ में ओपेनर भी। बइठ के ओपेनर से कार्क खोलली। हल्का सा एगो आवाज भइल आ बोतल के अंदर से बुलबुला निकल के मुँह से ऊफने लागल। धीरे-धीरे गिलासन में भर दीहलीं। एगो गिलास उठा के सुबेश के ओर बढ़वली। सुबेश के तऽ होश-हवाश गुम हो गइल रहे। ऊ अपना के कंट्रोल करे के कोशिश कइलन आ हाथ से गिलास पकड़लन। ऊ दोसर गिलास हाथ में लेके सुबेश का गिलास से टकरा के कहली–

"चियर्स यंग मैन।"

– सुबेश तकलन। किरण मैडम का चेहरा पर मुस्कान फइलल रहे। सुबेश के काँपत आवाज निकलल–

"चियर्स।"

सुबेश नवसीखुआ तऽ रहस ही। फटाफट आधा गिलास पी लीहलन। तब तक किरण अभी दू तीन घूँट ही ले ले रहस। दस-पंद्रह

मिनिट में सुबेश पर शुरुर चढ़े लागल।

उनकर अंदर के डर हटे लागल। उनका बोले के इच्छा करे लागल। बाकिर अबहीं भी हिम्मत साथ ना देत रहे। किरण शाइत उनकर अवस्था समझ गइल रहस बोललीं–

"हाँ सुबेश, तहरा पता ना रहल जे प्रोफेसर साहेब नइखीं।"

"ठीक से ना रहल मैडम। तबही त खबर लेवे आइल रनी ह।"

"काहे? उनका अनुपस्थिति में ना आवे के चाहीं का।"

"ना-ना मैडम। हमरा त आपके देखे के बड़ी इच्छा होला, बाकिर।"

"बाकिर का? एकर माने तहरा मन में कुछ दोसर बा?"

"दोसर माने?"

– सुबेश चिहुंकलन।

"ओकर माने तऽ तूही बता सकेल।"

– किरण कहली।

"अच्छा ल खतम कर। एगो लेके कबसे बइठल बाड़।"

सुबेश फटाक से गिलास खाली कर दीहलन। मैडम गिलास में फिर से ह्विस्की सोडा भर दीहली–

"अब धीरे-धीरे, लऽ सुबेश।"

किरण आपन गिलास होठ से लगा के बोललीं–

"देख हम दू घंटा से पीयतानी बाकिर अबही तक दू पेग नइखे भइल।"

सुबेश पर नशा चढ़ल जात रहे। ऊ कहले–

"आप त मैडम लेडी बानी ना।"

किरण खिलखिला के हँस पड़ली–

"अच्छा, त तू मर्द बाड़। ऊहो देखहीं के बा।"

सुबेश का महसूस भइल– आज काम बने वाला बा शाइद। ऊ

उठ के खड़ा भइलन। पेशाब महसूस होत रहे कानी अंगूरी दीखवलन। मैडम ट्वलेट के तरफ इशारा कइलीं। सुबेश डगमगात पैर से ओने गइले। बड़ी मुश्किल से जिपर खोललन। लागत रहे आज रावण वाला पेशाब होता। एने माथा चक्कर देत रहे। कईसहूँ पैंट ठीक कइलन। जिपर बंद करत-करत ड्राईंग रूप में अइलन। पैर ठीक से पड़त ना रहे। कइसहूँ मैडम का पास सोफा पर बइठलन।

"का भइल, सुबेश।"

– किरण पूछलीं।

"रउरा नइखे बुझात।"

– सुबेश उनका ओर ताकके कहलन।

"लागता तहरा नशा हो गइल बा।"

"नशा त रउरा के पहिला दिन देखला के बादे शुरू हो गइल रहे।"

किरण चुप।

सुबेश के बइठे में असुविधा लागत रहे। ऊ लेट गइले सोफे पर। आँख बंद होखे लागल। उनका लागल किरण उनकर सर अपना गोद में ले लीहली। उनकर अँगूरी सुबेश के बाल सहलावे लागल रहे।

सुबेश के नींद खुलल त खुद के फर्श के दरी पर पवलन ऊ लगे के सोफा पर लपक के बइठलन। घड़ी देखलन छ: बजल रहे। थोड़ा मनस्थ होखे में समय लागल। एने-ओने देखे लगले। तबही किरण मैडम अइलीं। साड़ी पहीनले रहस।

"कइसन लागता सुबेश?"

"ठीक बा मैडम।"

फिर कहलन–

"हम चली मैडम?"

"ना कुछ खा लऽ।"

नौकरानी के आवज दीहलीं। ऊ एगो प्लेट ले आइल। पकौड़ी रहे। सुबेश के पकौड़ी बड़ा अच्छा लागे। अबही त भूखो लागल रहे। ऊ खाये लगलन। खतम करके उठ खड़ा भइलन, किरण मैडम कहलीं–

"प्रोफेसर साहब के कुछ कहे के रहे का?"

"ना मैडम। कुछ ना।"

– सुबेश कह ना पवले–

"हम त आपेसे मिले आइल रनीह।"

रास्ता पर आके मुड़ के देखलन– मैडम मुस्कुरात रहलीं आ हाथ हीलावत रहलीं।

सुबेश का दोसर घटना याद आइल। मसुरी ट्रेनिंग के समय। एगो पंजाबी लड़की रहे, रेवेन्यू सर्विस के। बड़ा ही फ्लर्ट किस्म के। सब लोग सोचे परविंदर सिविल सर्विस पास भइल कइसे। दोसर कवनो लड़की से ऊ बातों ना करे। सब समय लड़ीकन के साथ ही गप्प लड़ावे। कई बार फैकल्टी भी ओके डाँट लगावे सब।

दिसंबर के छुट्टी में सबका घरे जाये के रहे। पार्टी होत रहे। ड्रिंक भी पार्टी के हिस्सा रहे। बाकिर सभे सबसे अच्छा दीखावे के चेष्टा में रहे। माने गिलास हाथ में रहे मात्र। पीये के कोशिश केहू ना करत रहे। हठात् परविन्दर सुबेश का पास आके बईठ गइल।

मुस्कुरा के तकलस। थोड़ा इंतजार करके कहलस–

"का बा तहरा गिलास में सुबेश।"

"बीयर।"

"लेडीज ड्रिंक। लेट मी हैव ईट।"

एक झटका में सुबेश के हाथ से ऊ गिलास ले लिहलस आ गटक गइल। सुबेश के आँख फैलल रह गइल।

"Don't get upset. I am fetching something for

you. *(उदास मत हो बच्चा हम तहरा खातिर दोसर ला देतानी।)*

ऊ उठ के गइल काउन्टर के पास। लौट के आइल तऽ दूनों हाथ में दूगो भरल गिलास रहे। एगो सुबेश के पकड़ा के कहलस–

"चियर्स!"

ना जाने का रहे ओह लड़की में। सुबेश मंत्रमुग्ध जइसन पीये लगलन। एने पार्टी धीरे-धीरे खुले लागल रहे। छोट-छोट ग्रुप मे बँट गइल रहे लोग। कहीं जोर से त कहीं धीरे-धीरे फुसफसाहट।

गिलास खतम कर के परमिन्दर कहलस–

"कइसन लागता सुबेश।"

जवाब में सुबेश खाली ओकरा ओर ताके लगलन।

"कम विथ मी" परविन्दर के आवाज में जइसे जादू रहे। परविन्दर का पीछे-पीछे सुबेश पार्टी छोड़ के चल दीहलन। परविन्दर होस्टल में आके आपन कमरा खोललस। सुबेश के इशारा कर के अंदर बुलवलस। दरवाजा खुलले रहे।

परविन्दर सुबेश के अंकवारी में जकड़ लीहलस आ झपाझप चुमें लगलस। करीब आधा घंटा बाद दूनो कपड़ा ठीकठाक करके निकललन। सुबेश के हिम्मत ना भइल पार्टी में जाये के। ऊ सीधे अपना कमरा में चल गइलन। पता ना कब अंघी आ गइल।

दोसरा दिन उनकर रूम मेट कहलस–

"अरे यार, तू कब पार्टी छोड़ के चल गइल? जान-ताड़ परविन्दर पार्टी में जान डाल दीहले रहे। सबका के नचवा दीहलस।"

सुबेश अपना दिमाग पर दबाव डललन–

"कब भइल ई सब?"

"अरे यार, तू साँझही घर में घुस गइल का? सब लोग डेराईल-डेराईल पीयत रहे। जइसे प्रिंसिपल गइलन सब लोग शुरू हो गइल। परविन्दर पहिले त गाना शुरू कईलस ऊ वाला..."

"कवन गाना?"

"कजरारे-कजरारे तेरे कारे-कारे नयना...। बस सब लोग अपना मुखौटा से बाहर आ गइल। जेकरा जे बुझाइल करे लागल। बस मौज हो गइल। आ तू बुरबक आ के सुत गइल।"

सुबेश कइसे बतावस कि परविन्दर उनके कौन सुख दीहले रहे।

नियमानुसार दफ्तर में रहस। कंप्युटर खोल के आपन मेल चेक कइलन। जहाँ जइसन जरूरत रहे आपन टिप्पणी भा आदेश देके मेल फारवर्ड कर दीहलन। तबही डाक फोल्डर रख गइल चपरासी। उनके नमस्कार के जवाब देके सुबेश कंप्युटर से बिना ध्यान हटवले कहलन–

"का हाल बा मिश्रा जी?"

"बढ़िया सर।"

– कहके चपरासी मिश्रा कमरा से निकल गइलन।

ऑफिस में पहिला धक्का संभाल के सुबेश एप्वाइंटमेंट पर नजर दीहलन। आज कुछ खास ना रहे। इन्टरकॉम से सचिव के नंबर मिलवलन। ओने से आवाज आइल–

"यस सर।"

"ऊ ड्राफ्ट कतना दूर बा?"

"तैयार बा सर।"

"साँझ ले भेजी हमरा पास।"

"सर, काल्ह तक समय दीहल जाव।"

सुबेश समझ गइलन अभी ड्राफ्ट (मसौदा) तैयार नइखे। ऊ थोड़ा भारी आवाज में कहलन–

"काल्ह सुबह हमरा मेल पर होखे के चाही।"

"ओके सर।"

सुबेश फ्लास्क से कॉफी ढारे लगलन। काफी पियत का मन में

आइल। ड्रावर से ऊ लिफाफा निकललन। नोटसीट वाला हिस्सा हटा के पेटिशन वाला पन्ना निकललन। पीयर हो गइल रहे कागज। पढ़े लगलन। पहीला पन्ना पर कुछ अइसन ना रहे। दोसरा पन्ना से अर्जी के बयान शुरू भइल–

2. हमार शादी श्री अजितेश लाहिड़ी के साथ 13 दिसंबर, 1983 के हिंदू रीति-रिवाज के अनुसार संपन्न भइल बा। ओकरा बाद हमनी दूनो आदमी पति-पत्नी के तरह एक घर में रहत बानी।
3. 25 दिसंबर, 1984 के हमनी के एगो पुत्र भइल।
4. हमनी के वैवाहिक जीवन में कवनो तरह के समस्या ना रहल हऽ।
5. करीब 7 साल पहीले हमरा पड़ोस में रहे वाला एगो दंपति के साथ हमनी के नजदीकी बढ़ल। ऊ सब हमनी के करीबी उम्र के रहे आ उनके बच्चा हमनी के बच्चा से करीब 1 वर्ष अधिक के रहे।
6. सामान्य पड़ोसी के तरह हमनी का कभी-कभार घुमेफिरे भी एक साथ जाइ सन। एक दूसरा के इहाँ आइल भी अबाध रहे।
7. हमार पति श्री अजितेश लाहिड़ी अपना रिसर्च वर्क में कुछ ज्यादा ही व्यस्त रहेलन, हलाँकि घर की ओर ऊ पर्याप्त समय देवेलन।
8. जइसे-जइसे हमार बच्चा बड़ा होत जाता, हमरा पास समय के उपयोग नइखे लागत। हमरा बड़ा ही खाली-खाली लागे लागल।
9. हम डायरी लिखे के शुरू कइनी। डायरी में हम कुछ आपन बीतल आ कुछ रोमांटिक कल्पना (फैन्टसी) मिल मिला के लिखे लगनी। कवनों-कवनों दिन लिखीं आ बाकी दिन पढ़ीं।

10. डायरी हमार सबसे प्रिय आ खास रहल। एसे हमरा एक तरह के शांति मिले। हमार खालीपन भरे लागल।
11. हम आपन डायरी छुपा के रखीं काहे कि ओमे के कवनों बात हम अपना सिवा दोसरा के साथ बाँटे के ना चाहीं–अजितेश से भी।
12. करीब दू महीना पहीले हमरा लागल कि अजितेश हमरा हर बात पर मीन मेख निकालत बाड़न। उनका मुँह से अइसन भाषा निकले लागल जवन उनका स्वभाव के विरुद्ध रहे। पहीले तऽ हम ध्यान ना देहनी। बाकिर उनकर व्यवहार हमरा के ज्यादा दिन निश्चिन्त ना रहे दीहलस।
13. दिन-प्रतिदिन अजितेश के व्यवहार हमरा आ बच्चा के प्रति बुरा होखे लागल बा। पिछली होली में हमार ऊ पड़ोसी होली खेले आइल रहस। ना जाने कइसे हमार पैर फिसल गइल। अजितेश देखत रहलन बाकिर आगे ना बढ़लन। ऊ पड़ोसी भाग के हमरा के उठवलन आ सहारा दे के अंदर ले अइलन। उनका गइला के बाद अजितेश खुल गइलन। हमरा के साफ-साफ कहलन कि उनका पक्का विश्वास बा कि इहे ऊ आदमी बा जवना का साथ हमार नाजायज संबंध चल रहल बा। हमनी के बीच भयंकर झगड़ा के बाद ऊ बतवलन कि हमार डायरी ऊ पढ़ चुकल बाड़न।
14. हमरा हजार सफाई के बाद भी अजितेश सामान्य नइखन होत। हमनी के जीवन में विष घुल चुकल बा। एकर प्रभाव सबसे अधिक उनके पर हो रहल बा। उनकर स्वास्थ्य दिन पर दिन गिर रहल बा आ हमेशा झुंझआइल रहत बाड़न। जवना से हमार आ हमरा बच्चा पर भयंकर बुरा असर पड़ रहल बा।
15. हम बहुत सोच-विचार के ई निर्णय कइनी ह कि हमनी का बीच

शादी शुदा रहला के मतलब नइखे बाचल। काहे कि शादी के सर्वप्रमुख आधार निर्बाध बातचीत हमनी के बीच नइखे रह गइल। एह से हम इ तलाक के अर्जी दाखिल कर रहल बानी।

16. तलाक के बाद हम चाहब कि बच्चा हमरा पास रहो। अजितेश यदि चाहस त ओकरा से मिल सकेलन।
17. तलाक के बाद अजितेश दूसरा शादी खातिर स्वतंत्र बाड़न।
18. हम कवनो तरह के मुआवजा के दावा नइखी करत।

उक्त आधार पर मान्य अदालत के हमार अनुरोध बा कि हमार तलाक के अर्जी मंजूर कर के हमनी दूनों आदमी के स्वतंत्र रूप से स्वस्थ जीवन बितावे में सहयोग करे।

सुष्मिता सान्याल

बारह

आज संसद में परिवार अदालत (संशोधन) विधेयक पर बहस होखे के रहे। मंत्री जी के सामने सुबेश बइठल रहस। मंत्रीजी के भाषण से बहस शुरू होखे के रहे। जइसन प्रथा रहे भाषण के सब भाषा में अनुवाद भी उपलब्ध होखे के चाहीं। अबही मंत्री जी से अनुमोदन मिलला के बाद ही भाषण अनुवाद शाखा में जाई। फेर चार बजे तक संसद सचिवालय में चल जाई। इहे त सरकारी तंत्र ह। कहीं भी छोट देरी सारा तंत्र के रोक सकेला। मंत्री जी पढ़त रहस। सुबेश भी आदतन उनके स्पीड से पढ़त रहस।

परिवार अदालत कानून 1984 में पारित भइल रहे। मुख्य रूप से परिवार विवाद के निपटारा खातिर। समाज में परिवार के महत्त्व पर कहे के जरूरत नइखे। एक पंक्ति में कहल जाव त समाज परिवार के ही बड़ा आकार ह। परिवार के नींव पति-पत्नी संबंध से शुरू होला। आ, हमरा कहे में संकोच नइखे होत, ओही जा खतम होला।

समय के साथ पति-पत्नी संबंध के मापदंड भी बदले ला। बाकिर सारा दुनिया में एक पति-एक पत्नी सिद्धांत रूप में मानत आवता। खास कर के भारतीय समाज एह बारे में बड़ा ही अचल बा। बाकिर ई आदर्श बा वास्तविकता ना। आज जब व्यक्ति स्वाधीनता हर तर्क से ऊपर देखल जाता, पति-पत्नी में मतविरोध रोग ना बल्कि स्वाभाविक समझे के चाहीं।

बाकिर समाज के एगो आपन नियम बा। हमनी का समाज के प्रतिनिधि बानी। एहसे जरूरी हो जाता कि व्यक्ति स्वाधीनता आ

सामाजिक अवस्थान के बीच एगो संतुलन रखल जाव। पति-पत्नी के एक साथे रहल जरूरी बा। उनका अलग होखे के अधिकार पर काबू रखल भी जरूरी बा। आप सब के आश्चर्य लागत होई कि हम कुछ उल्टा कह रहल बानी। ना! खाली किताबी बात पर बहस से नइखे चले के। वास्तविकता से नजर मोड़ के कवनों समाज जीवंत ना रह सके। हम दृढ़ निश्चय से कह सकऽतानी कि भारतीय समाज जीवंत बा, रहे, आ रही।

एक पत्नीवाद चला के राम भगवान बनले तऽ भारतीय समाज कुंती आ द्रौपदी के प्रतिव्रता के श्रेणी में रखलस। आज के तारीख में पति-पत्नी के बीच सबसे बड़ा समस्या विवाहेत्तर संबंध बा। कबो वास्तव में तऽ कहीं-कहीं काल्पनिक। विवाहेत्तर संबंध शादीशुदा जीवन में कबो, कहीं भी, घट सकेला। ई जिनगी के गतिमति बदल देला चाहे एकरा बाद शादी रहे भा टूट जाय। काहे कि दूनो पक्ष में कवनो एकरा के भूल ना सके। जवना पक्ष का साथ ई घटेला ओकरा ऊपर दोषी भाव, एकाकीपन confusion आ दिशाहीनता के भूत सारा जीवन खातिर धर लेला। दूसरा पक्ष पर भी ए भूत के छाया बराबर रूप से पड़ेला।

दोसरा तरफ विवाहेत्तर संबंध में आनंद के प्रति भयंकर आकर्षण होला। ई क्षणिक आनंद से प्रेरित ना होला। एकरा में रोमांच होला, रोमांस होला, आदर्श होला, पौराणिकता होला, आ सबसे बड़ा होला संवेदना एकरा में सेक्स होला बाकिर ओकर महत्त्व ओतना ना होला। बल्कि एकरा में दर्द आ डर होला। आउर होला जीये के तीव्र इच्छा।

अधिकांश व्यक्ति शादी इहे सोच के करेला कि विवाहेत्तर संबंध ना आई उनके जिंदगी में। बाकिर सच ई बा कि दूनो पक्ष या कम से कम ओमें से एक का जिदंगी में ई घटेला। एहसे ई ठीक कइल ज्यादा जरूरी बा कि ई काहे घटल।

विवाहेत्तर संबंध तीन कारण से घट सकेला–

(1) दूनो में से कवनो पक्ष के सामान्य जीवन गति में रुकावट।

(2) चाहत से उत्पन्न दिशाहीनता।

(3) कवनों तरह के जाल में फँसल।

एक बार सही कारण पता चल गइला पर समाधान कठिन नइखे। प्यार के मलहम ई तीनों घाव के भर सकता।

मंत्री जी थोड़ा दम लीहलन। देखलन सबका चेहरा पर हल्का मुस्कान फइल गइल बा शुरू कइलन–

"देखनी सभे 'प्यार' शब्द मात्र से कइसन सुकून मिलेला। प्यार सही व्यक्ति के तलाश ना ह, बल्कि सही संबंध तैयार कइल हऽ। प्यार पैदा कइल जाला। तऽ शादी के समय के प्यार से ज्यादा महत्त्वपूर्ण बा शादी शुदा जिंदगी में प्यार के फलन। महत्त्वपूर्ण बा ई ध्यान रखल कि दूनो पक्ष के बीच प्यार आ प्यार के हर क्षण में अनुभूति एक पंक्ति में हम कहब वैवाहिक जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु बा संवाद। पति-पत्नी के बीच संवादहीनता ही वैवाहिक जीवन के सबसे बड़ा शत्रु बा।

तलाक के बाद भी पति-पत्नी एक दूसरा के ना भूल पावेला। एकसाथ बीतल हरेक क्षण उनके झकझोरत रहेला। बाकिर दुर्भाग्यवश तलाक से लवटे के कवनो रास्ता ना बा। अतः तलाक कानून के वर्तमान स्वरूप ठीक-ठीक ही बा। तलाक चाहेवाला दंपति के कुछ समय अनिवार्य रूप से मिले के चाही। एक दूसरा के बिना यदि ऊ सब एक साथ रह पावे तभी तलाक मिले के चाही। हमार दोसर प्रस्ताव बा एक-एक साल के अवधि में दूनो में कवनो पक्ष के अवस्था मुताबिक आर्थिक सहायता सरकार के तरफ से कइल जाई। एकरा खातिर एगो विशेष कोष बनावल जाई।

हम मुख्य रूप से एही संशोधन खातिर बिल पेश करऽतानी।

❐ ❐ ❐

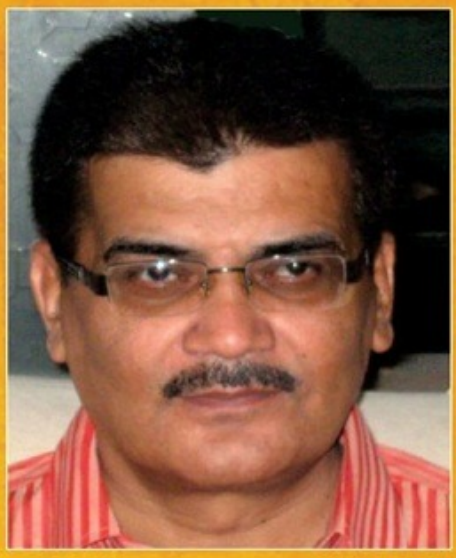

हरेन्द्र कुमार

जन्मतिथि – 12.11.1955

जन्म स्थान – ग्राम नादौआ, थाना बनियापुर, जिला सारण छपरा

शिक्षा – लॉ ग्रेजुएट, कलकता विश्वविद्यालय, कोलकाता

भोजपुरी, हिंदी आ अंग्रेजी तीनों भाषा में लेखन। भोजपुरी में दू गो उपन्यास 'सुष्मिता सान्याल के डायरी' आ 'जुगेसर' प्रकाशित हो चुका बावे। एगो कहानी संग्रह प्रकाशन के राह में बावे।

इहाँ के पेशा से वकील आ सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी बानी। इहाँ के अपना उपन्यास 'सुष्मिता सान्याल के डायरी' आ 'जुगेसर' से भोजपुरी साहित्य जगत में विशिष्ट कथाकार के रूप में अपना पहचान स्थापित कइले बानी।

भोजपुरी साहित्य के आधुनिक संवेदना, शिल्प आ वैचारिक विस्तार देवे वाला रचनाकारन में हरेंन्द्र कुमार के अग्रणी स्थान बावे। इहाँ का लेखन लोकजीवन के माटी से जुडला के संगे संगे इतिहास-बोध, सामाजिक यथार्थ आ गमानवीय करुणा के नया आयाम देले बावे।

हरेन्द्र बाबू रचनात्मक संसार इतिहास , लोकजीवन, सामाजिक परिवर्तन आ मानवीय संवेदना के गहिर अनुभूति से समृद्ध बावे। गाँव से शहर तक के बदलत जीवन, विस्थापन, स्मृति, संघर्ष आ समय के बदलत मूल्य इहाँ के कथा-संसार के प्रमुख विषय हवे।

संप्रति – कलकत्ता उच्च न्यायालय में अधिवक्ता। मोबाइल नं. – 8902042623

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032
https://www.anuugyabooks.com

978-93-47593-26-0
9 789347 593260
₹ 200.00